

केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान



वार्षिक विवरण
2014-2015

चोगलमसर, लेह-194101, लदाख (ज. व क.)



विषयानुक्रमणी

	पृ.सं.
1. संक्षिप्त इतिहास	5
2. उद्देश्य	6
3. प्रबन्धन	6
4. उप-समितियों का संरचना	6
5. धन	7
6. कर्मचारी संख्या	7
7. संकाय और विभाग	8
8. नवीन प्रवेश	10
9. परिसंवाद गोष्ठी/कार्यशाला	10
10. शैक्षिक यात्रा	11
11. प्रकाशन	12
12. शोध कार्य	12
13. परिसर	12
14. पुस्तकालय	13
15. संग्रहालय	13
16. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रियाकलापः	13
(क) स्व.ग्यल-स्रस बकुला रिन्पोछे व्याख्यानमाला	
(ख) विदेशी बौद्ध विद्वानों का व्याख्यान	
(ग) पूज्य कटोग ग्यत्से रिन्पोछे जी का व्याख्यान	
(घ) दवाईयों की सुविधा	
(ङ) वार्षिक क्रीडा-प्रतियोगिता	
(च) वार्षिक/मासिक पत्रिका	
(छ) विज्ञान व्याख्यान शिविर	
(ज) जलवायु परिवर्तन पर कार्यशाला	
17. पाठ्यक्रम	15
18. छात्रवृत्ति	16
19. विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण	16
20. परीक्षा परिणाम	16
21. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय	16
22. वार्षिकोत्सव	17
23. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें	17
(क) भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकार की जयन्ती	



(ख) सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवस	
(ग) हिन्दी दिवस	
(घ) चार आर्यसत्य उपदेश के प्रतिमान का प्रतिष्ठान	
(ङ) लद्दाख के बौद्ध मठों द्वारा मंत्र पाठ, एक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर	
(च) स्वच्छ भारत अभियान	
24. प्रतिष्ठित महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन	19
(क) श्रीमती, अरविन्द मंजीत सिंह, संयुक्त सचिव, भारत सरकार	
(ख) श्री नवीन महाजन, प्रधान प्रेक्षक	
(ग) एन.ए.ए.सी. के सहकर्मी दल का आगमन	
(घ) यू.जी.सी विशेषज्ञ समिति की बैठक	
25. बौद्ध दार्शनिक शास्त्र-अनुवाद परियोजना	20
26. हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्वकोश परियोजना के संकलन का आरम्भ	20
27. विदेशी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था	20
28. क-ग्युर का पाठ	21
29. वाराणसी में बौद्ध महोत्सव	21
30. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र	21
31. उपाधि/उपाधि-पत्र प्राप्त करने के बाद छात्रों की नियुक्ति	22
32. डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार	23
33. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.)	24
34. परिशिष्ट	
i) प्रबन्धक समिति की संरचना	26
ii) शिक्षा समिति की संरचना	28
iii) वित्त समिति की संरचना	29
iv) प्रकाशन समिति की संरचना	30
v) ग्रन्थालय समिति की संरचना	31
vi) शोध समिति की संरचना	32
vii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की कर्मचारी संख्या	33
viii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का परीक्षा परिणाम	35
ix) गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवार एवं कक्षावार नामांकन का विवरण	36
x) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार)	39
xi) डी.पी.एस., जंस्कार की कर्मचारी संख्या	40
xii) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)	40
xiii) कर्मचारी संख्या (बी.डी.एस.वी., केलांग)	41





1. संक्षिप्त इतिहास:

सन् 1959 से पूर्व लदाख के विद्वान्, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। वे तिब्बत जाकर वहाँ के विभिन्न प्रसिद्ध महाविहारों, यथा-ड्रि-गुड, ग-दन, सेरा, टशी-ल्हुनपो, ड्रे-पुड, सक्या, सङ्-डग-छोसलिङ, देरगे आदि में अनेक वर्षों तक बौद्ध विद्याओं का अध्ययन करते थे। परन्तु सन् 1959 की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। तत्पश्चात् यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि बौद्ध दर्शन के विधिवत् अध्ययन के लिए इस आर्य देश अर्थात् भारत में ही एक बौद्ध विद्या केन्द्र की स्थापना की जाय। बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए लेह को चिह्नित किया गया, जो प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पारम्परिक दृष्टि से सर्वथा अनुकूल था।

तदनुसार चौदहवें परमपावन दलाई लामा जी के वरिष्ठ गुरु योगजिन लिङ रिन्पोछे द्वारा वर्तमान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की पूजन-विधि द्वारा स्थापना की गयी। यह संस्थान प्रारंभ में 'बौद्ध दर्शन महाविद्यालय' के नाम से जाना जाता था। सन् 1962 में स्व. भदन्त कुशोक बकुला जी के आग्रह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लदाख के लोगों के बीच इस प्रकार के संस्थान की आवश्यकता का अनुभव किया। तदनुसार उन्होंने इस संस्थान को प्रबंधन एवं वित्तीय सहायता के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग को सौंपना स्वीकार किया।

प्रारम्भ में इस संस्थान में मात्र 10 भिक्षु छात्र अध्ययन करते थे, जो लदाख के विभिन्न गोनपाओं से संबद्ध थे। छात्रों को भोट साहित्य तथा बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए दो अध्यापकों को नियुक्त किया गया था। लगभग तीन वर्षों तक सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का खर्च उपर्युक्त दस गोनपाओं ने वहन किया। सन् 1959 से 1961 तक यह विद्यालय लेह में स्थित रहा। उसके पश्चात् इसको लेह से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्पितुग गाँव में स्थानान्तरित किया गया।

सन् 1973 में संस्थान को लेह से 8 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में चोगलमसर में पुनः स्थानान्तरित किया गया। सन् 1964 में संस्थान को एक शैक्षिक संस्थान के रूप में जम्मू व कश्मीर पंजीयन कानून 1941 के अन्तर्गत पंजीकृत किया गया। प्रारम्भ में यहाँ बौद्ध दर्शन के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, भोटी एवं अंग्रेजी विषयों का अध्ययन होता था। सन् 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र. से सम्बद्ध कराया गया। बौद्ध विद्या के प्रकाण्ड तिब्बती विद्वान् भदन्त येशे थुबतन ने 1967 तक संस्थान के प्रथम प्राचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् भदन्त लोछोस रिन्पोछे जी की संस्थान के द्वितीय प्राचार्य के रूप में नियुक्ति हुई। डॉ. टशी पलजोर ने सन् 1979 से 2005 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। सन् 2005 से 2010 तक पाँच साल प्राचार्य के रूप में कार्य करने के बाद डॉ. नवांग छेरिंग संस्थान के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्ति हुए और 15 जून 2010 को डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी ने प्राचार्य पद का प्रभार लिया। तदनन्तर, दिनांक 19-12-2011 को रखे गए प्रबंधकारिणी के बैठक में प्राचार्य के पद को निदेशक के रूप में पुनर्नामकरण करने का निर्णय लिया गया। दिनांक 12-12-2014 को डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी ने निदेशक पद छोड़ा और निदेशक पद का प्रभार प्रो. कोनछोग वंगदुए को सौंपा गया।



2. उद्देश्यः

संस्थान का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा अर्थात् व्यक्तित्व को बौद्ध विचार, साहित्य, कला एवं विविध आधुनिक विषयों के ज्ञान द्वारा विकसित और सुसज्जित करना है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृति एवं कला की शिक्षा हेतु यह इस देश का एक अपूर्व संस्थान है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं-

- क. बौद्ध दर्शन का परिपक्व ज्ञान, जिसके अन्तर्गत इतिहास, संस्कृति एवं कला का अध्ययन।
- ख. प्राचीन शास्त्रों एवं आधुनिक भाषाओं का अध्ययन, जिसमें संस्कृत, भोटी, पालि, हिन्दी और अंग्रेजी समाहित हैं।
- ग. विभिन्न आधुनिक विषयों का अध्ययन, जिनमें इतिहास, राजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, तुलनात्मक दर्शन, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक शास्त्र सम्मिलित हैं।
- घ. बौद्ध धर्मग्रन्थों को संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद करना
- ङ. दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह, संरक्षण तथा उनका प्रकाशन।
- च. बौद्ध दर्शन, इतिहास, कला एवं हिमालयी संस्कृति पर शोध की व्यवस्था।
- छ. पुरातात्विक महत्व की प्राचीन कला-कृतियों का संग्रह एवं संरक्षण।
- ज. अमची (भोट-चिकित्सा विज्ञान), धार्मिक शिल्पकला, काष्ठकला, थंका चित्रकला आदि सांस्कृतिक महत्व के विषयों का अध्ययन।

3. प्रबंधनः

संस्थान का प्रबंधन संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार की अध्यक्षता में गठित एक प्रबंधकारिणी के द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रबंधकारिणी के सदस्यों का संगठन विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संघों, विश्वविद्यालयों तथा बौद्ध विद्वानों के प्रतिनिधियों से बना है। प्रबंधकारिणी के पुनर्गठन की पहली बैठक से लेकर सदस्यों के कार्यकाल की अवधि तीन साल है। संस्थान के निदेशक इस प्रबंधकारिणी के सदस्य-सचिव हैं। वर्तमान में इस प्रबंधकारिणी की संरचना पृष्ठ संख्या 26 पर परिशिष्ट के रूप में है। इस प्रबंधकारिणी की बैठक हर छः महीनों के बाद आयोजित की जाती है।

4. उप-समितियों की संरचनाः

प्रबंधकारिणी के निर्देशों के समुचित पालन हेतु अनेक उप-समितियों की संरचना की गई है। इन उप-समितियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

शिक्षा समिति: प्रबंधकारिणी द्वारा प्रख्यात पण्डितों एवं विद्वानों की एक शिक्षा समिति की संरचना की गई है।



तत्सम्बन्धी क्षेत्रों में प्रबंधकारिणी को उसकी आवश्यकतानुसार सलाह देने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति की बैठक होती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 28 पर है।

वित्त समिति: संस्था के स्मरण-पत्र और संस्थान के नियम एवं नियमन के अनुसार उप-सचिव (वित्तीय)/निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक वित्त समिति की संरचना की गई है। वित्तीय आशयों से संबंधित प्रस्तावों पर समुचित सिफारिश बनाने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति का बैठक होती है। यह समिति संस्थान के वार्षिक लेखा एवं आय-व्यय आदि की भी समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 29 पर है।

प्रकाशन समिति: संस्थान हिमालय की कला, संस्कृति एवं भाषा से सम्बद्ध दुर्लभ ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों का प्रकाशन भी करता रहा है। इन दुर्लभ ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों को प्रेस में भेजने से पूर्व इनके प्रकाशन की समीक्षा एवं उपादेयता प्रमाणित करने के लिए प्रकाशन समिति के समक्ष रखा जाता है। यह समिति प्रकाशन के क्षेत्र में प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों को जोड़कर बनी है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 30 पर है।

ग्रन्थालय समिति: ग्रन्थालय समिति पुस्तकालय के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त विशेषज्ञों से बनी है और यह समिति समय-समय पर ग्रन्थालय की प्रगति एवं उत्कृष्टता के लिए सिफारिश करती है, जिसमें अतिरिक्त कर्मचारी, यंत्रों (मशीन) एवं उपकरणों, डिजिटलीकरण और सूचीपत्र आदि की आवश्यकतायें सम्मिलित हैं। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 31 पर है।

शोध समिति: संस्थान की शोध-समिति शोधवृत्ति हेतु शोध-छात्रों का चयन करने के लिए साक्षात्कार का कार्य-संचालन करती है और शोध-छात्रों के क्रियाकलापों तथा प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 32 पर है।

5. धन:

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग इस संस्थान को सम्पूर्ण आर्थिक अनुदान प्रदान करता है। वर्ष 2013-14 के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने प्रबन्धन समिति द्वारा अनुमोदित संस्थान की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए योजनागत तथा योजनेतर मदों में क्रमशः रु 785.00 लाख एवं रु 690.00 लाख स्वीकृत किये हैं।

6. कर्मचारी संख्या:

संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से संस्थान के निदेशक एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी के रूप में संस्थान का पर्यवेक्षण करते हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि-वार संख्या, शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर श्रेणी का पृथक् विवरण पृष्ठ संख्या 33 पर परिशिष्ट के रूप में है।





7. संकाय तथा विभाग:

इस संस्थान को विश्वविद्यालय की पद्धति पर सुचारू तथा प्रभावी रूप से चलाने के लिए बौद्ध विहारों की परम्परा, पांच महाविद्याओं के आधार पर संस्थान में संकायों एवं विभागों की स्थापना की गयी है, जो निम्न है:

1. अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)
2. शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Language)
3. भोट चिकित्स एवं शिल्प विद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Science and Arts)
4. आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस के अतिरिक्त उक्त संकायों को इनके अध्ययन के अनुसार विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया है, जिनका वर्णन निम्नप्रकार है:

1. अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)

यह संकाय मूलशास्त्र एवं विभिन्न सम्प्रदायों की शाखाओं सहित छः विभागों से बना है। बौद्ध विहारों की प्रणाली के अनुसार अध्यात्म तथा न्यायविद्या दो स्वतन्त्र विद्याएँ हैं, जिनके अनेक विभाग हैं, परन्तु संस्थान के पाठ्यक्रम की अनुकूलता के लिए इनको साथ रखा गया है। उपरोक्त संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं-

- i) भोट बौद्ध दर्शन विभाग
- ii) बौद्ध दर्शन विभाग (संस्कृत माध्ययम)
- iii) जिङ्मा सम्प्रदाय विभाग
- iv) कग्युद् सम्प्रदाय विभाग
- v) सक्या सम्प्रदाय विभाग
- vi) गेलुग् सम्प्रदाय विभाग

2. शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Language)

यह संकाय भाषाओं से बना है। इस संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं-

- i) भोटी/तिब्बती विभाग
- ii) संस्कृत विभाग
- iii) पाली विभाग
- iv) अंग्रेजी विभाग
- v) हिन्दी विभाग





3. भोट चिकित्सा एवं शिल्प विद्या अंकाय (Faculty of Bhot Medical Science and Arts)

संस्थान हिमालय की परम्परागत कला तथा संस्कृति को संरक्षण देने और उन्नत करने में अत्यधिक रुचि ले रहा है। तदनुसार इस क्षेत्र की कला तथा संस्कृति को संरक्षित एवं उन्नत करने हेतु निम्न विभागों की स्थापना की गई है:

i) **भोट चिकित्सा तथा ज्योतिष विभाग:** रोगियों को जड़ी-बूटियों से निर्मित औषधियाँ उपलब्ध कराना इस क्षेत्र की सैकड़ों वर्ष से चली आ रही प्राचीन परम्परा है। इस प्रदेश में जब ऐलोपैथिक दवा नहीं थी, उस समय अमची विद्या (भोट चिकित्सा) ही अधिक प्रसिद्ध थी। वर्तमान समय में भी इस प्रदेश के लोग अमची (भोट चिकित्सा) को सर्वाधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि इससे दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। इन्हीं कारणों के चलते लोग इसे पसन्द करते हैं। उक्त बातों को ध्यान में रखकर संस्थान इच्छुक विद्यार्थियों को अमची (भोट चिकित्सा विद्या) की शिक्षा प्रदान कर रहा है। बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थी, जिन्हें भोटी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है, केवल उन्हें ही छः वर्ष के अमची (भोट चिकित्सा विद्या) पाठ्यक्रम के लिए उपयुक्त विद्यार्थी माना जाता है। ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं, जिन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई है और वे आज व्यक्तिगत एवं सरकारी पदों पर अमची कार्य कर रहे हैं।

ii) **पादम्पदिक थंका/चित्रकला विभाग:** चित्रकला इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। लदाख के बौद्ध विहारों में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न प्रकार के थंका-चित्र एवं भित्ति-चित्र दिखाई पड़ते हैं। अलची विहार के भित्ति-चित्र तथा हेमिस एवं लामायुरु गोनपा के थंका-चित्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इन विहारों में कुछ थंकाएँ हजारों वर्ष पुरानी हैं, जिनका आज भी दर्शन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहां के प्रत्येक गांव में एक गोनपा अवश्य दिखाई पड़ता है, जिसमें थंकाओं, भित्ति-चित्रों एवं मूर्तियों का अपार भण्डार है। गर्मी के समय में दुनियाँ भर से पर्यटक लदाख में स्थित थंकाओं, भित्ति-चित्रों, मूर्तियों तथा अन्य धार्मिक वस्तुओं से सुसज्जित बौद्ध विहारों का दर्शन करने आते हैं। संस्थान ने विद्यार्थियों के प्रशिक्षणार्थ भोटी चित्रकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी थंका चित्रकला का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

iii) **पादम्पदिक मूर्ति-कला विभाग:** लदाख क्षेत्र में मिट्टी से मूर्तियों तथा मुखौटों का निर्माण करना एक आम बात है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यहां के बौद्ध विहार मूर्तियों एवं मुखौटों से परिपूर्ण हैं। यहां के प्रत्येक विहार में विशेष तिथि पर धार्मिक त्यौहार अर्थात् गुस्तोर/दोस्मोछे/छे-चु मनाये जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के बुद्धों, बोधिसत्वों, इष्टदेवों आदि की वेश-भूषा एवं मुखौटा धारण कर मुखौटा-नृत्य जो छमसू के रूप में प्रसिद्ध है, का प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान ने विद्यार्थियों को बुद्धों, बोधिसत्वों, देवी-देवताओं, इष्टदेवों आदि की मूर्ति के निर्माण हेतु कला के प्रशिक्षणार्थ व्यवस्था कर रखी है। इच्छुक विद्यार्थी, जो दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, उन्हें छः वर्ष का मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी मूर्ति एवं मुखौटा निर्माण कला के अन्तर्गत प्रशिक्षण ले रहे हैं।

iv) **पादम्पदिक काष्ठकला विभाग:** प्राचीन काल में लदाख में पुस्तकों के प्रकाशन हेतु कोई मुद्रण यन्त्र उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में लोग लकड़ी के ब्लॉकों से धार्मिक ग्रन्थों या अन्यान्य ग्रन्थों की प्रतिलिपि प्राप्त कर लेते थे। धार्मिकग्रन्थों की लिपियां विशेषकर कटोर लकड़ी के ब्लॉक पर नियमित रूप से खोदी जाती हैं, जिससे बाद में पढ़ने के लिए किसी कागज़ पर छपायी की जा सके। एक बार किसी लकड़ी के ब्लॉक पर खुदाई



हो जाने पर ज़ेरक्स मशीन की तरह उससे हजारों बार प्रतिलिपियां निकाली जा सकती है। प्राचीन काल में लदाख में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध थी। यहाँ बौद्धविहारों एवं बौद्ध गृहों के छत पर पाँच रंगों की पताकायें फहराने की परम्परा है, जिन्हें दरचोग के नाम से जाना जाता है और मुख्य द्वारों पर बड़ी लम्बी पताका फहरायी जाती है जो दरछेन कहलाती है। कपड़े की पताकाओं पर लकड़ी के ब्लॉकों से सूत्रपाठ, मन्त्र, लुङ्ता एवं ग्यलछुन चेमो (द्वजाग्र) छापे जाते हैं, जो आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। उक्त काष्ठकला के निरन्तर संरक्षण के उद्देश्य से संस्थान ने एक छः वर्षीय काष्ठकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। यहाँ छात्र लकड़ी के ब्लॉक के निर्माण के अतिरिक्त साज-सज्जा वस्तु, यथा- ड्रेगन, पक्षी, सिंह, घोड़ा आदि जन्तुओं एवं अन्य वस्तुओं की निर्माण कला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। लदाख क्षेत्र में यह अत्यन्त प्रसिद्ध है और व्यक्ति अपनी जीविका के लिए इसे अच्छा क्षेत्र मानता है।

4. आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस संकाय के अन्तर्गत पांच विभाग हैं जो निम्न प्रकार हैं:

- i) बौद्ध इतिहास तथा संस्कृति (बौद्ध पुराणेतिहास) विभाग
- ii) तुलनात्मक दर्शन विभाग
- iii) इतिहास विभाग
- iv) अर्थशास्त्र विभाग
- v) राजनीतिक शास्त्र विभाग

8. नवीन प्रवेश:

संस्थान के निर्धारित प्रवेश के नियमों के अन्तर्गत प्रवेश समिति द्वारा साक्षात्कार के आधार पर छात्रों को कक्षा 6 से 9 तक में प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के शाखा गोनपा विद्यालयों के छात्रों को संस्थान में सीधे प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छः वर्षीय पाठ्यक्रम वाले अमची, तिब्बती थंका चित्रकला, मूर्तिकला तथा काष्ठ कला में भी सीट की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान सत्र के दौरान प्रस्तुत विवरण के अनुसार व्यावसायिक कक्षाओं के साथ सभी कक्षाओं में कुल 110 नये छात्रों को प्रवेश दिया गया।

9. परिसंवाद गोष्ठी/कार्यशाला:

- (क) प्राप्त विवरण के अनुसार वर्तमान सत्र के दौरान संस्थान ने डुजिंग फोडंग विद्यालय, ज़डस्कर में दिनांक 26-08-2014 से लेकर 28-08-2014 तक “ज़डस्कर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत” विषय पर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों, बौद्ध महाविहारों एवं संस्थाओं से विद्वानों को आमन्त्रित कर तीनदिवसीय अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का आयोजन किया। यह परिसंवाद गोष्ठी डुजिंग फोडंग विद्यालय की 25 वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर डी. पी. एस. ज़डस्कर में आयोजित की गयी थी, जिस का उद्घाटन



जड़स्कर के राजा नीमा नोरबु जी ने किया। भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं एवं विहारों से पधारे विद्वानों ने इस परिसंवाद गोष्ठी में भाग लिया और अपने शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये। इनके अतिरिक्त इस परिसंवाद गोष्ठी में अनेक संख्या में लदाख के स्थानीय विद्वानों ने भी भाग लिया। परिसंवाद गोष्ठी में प्रस्तुत किये गये शोधपत्रों/निबन्धों को “लदाख प्रभा” शीर्षक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस संगोष्ठी के समापन समारोह का संचालन जंस्कर पदुम के राजा फुनछोग दावा ने किया। इस अवसर पर केन्द्रीय बौद्ध विद्यालय संस्थान, लेह और डुजिंग फोडंग विद्यालय, जड़स्कर के वरिष्ठ विद्यार्थियों ने एक रंगा रंग सांस्कृतिक कार्य क्रम प्रस्तुत किया। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले दल को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- (ख) **वर्कशाप:** संस्थान ने दिनांक 7 दिसम्बर 2014 को “दैनिक जीवन में कालचक्र अभिषेक की शिक्षा का अभ्यास” विषय पर एक दिन के लिए वर्कशाप आयोजित की। इस दौरान छः विद्वानों ने अपने मूल्यवान शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये और उन पर प्रयाप्त चर्चा हुई। इस वर्कशाप में संस्थान के कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त अनेक भिक्षु भिक्षुणियों और श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यह प्रयास अत्यन्त सफल रहा और जिज्ञासुओं ने भविष्य में भी इस प्रकार की वर्कशाप आयोजन करने की माँग की। परम पावन 14वें दलाई लामा जी द्वारा दिनांक 3 से 15 जुलाई 2014 तक किये गये 33 वें कालचक्र अभिषेक के पश्चात् सामान्य लोगों में क्या परिवर्तन आया इस को जानने के लिए इस वर्कशाप का आयोजन किया गया।

10. शैक्षिक यात्रा:

संस्थान के उत्तर मध्यमा द्वितीय, शास्त्री तृतीय, आचार्य द्वितीय वर्ष, शिल्पकला, थंका चित्रकला तथा काष्ठकला कक्षा के 50 छात्रों का एक दल जनवरी 2015 में 36 दिनों के लिए शैक्षिक यात्रा (भारत दर्शन) के लिए भेजा गया। इस दल ने जम्मू, दिल्ली, कोलकाता, भुवनेश्वर, पुरी, मैसूर, चेन्नई, पांडिचेरी, गोवा आदि का भ्रमण किया। शैक्षिक यात्रा का आयोजन संस्थान के डॉ. सोनम वंगछुग, प्राध्यापक और श्रीमती शशिरावत के नेतृत्व में किया गया। उक्त यात्रा का उद्देश्य छात्रों को देश की ऐतिहासिक, औद्योगिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना तथा उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना है।

कनिष्ठ कक्षा के विद्यार्थियों को स्थानीय शैक्षिक यात्रा (लदाख दर्शन) के अन्तर्गत चंगथड घाटी में 5 दिन के लिए संस्थान के तीन अध्यापकों के नेतृत्व में ले जाया गया था। उक्त यात्रा में पूर्वमध्यमा द्वितीय कक्षा के कुल 62 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने ऐतिहासिक स्थल, विहार, झील आदि का दर्शन किया। इस प्रकार संस्थान ने इन शैक्षिक यात्राओं के संचालन पर रु.5.50 लाख रुपये व्यय किये।

उपरोक्त शैक्षिक यात्राओं के अतिरिक्त 37 अमची छात्रों के दल ने अमची अध्यापक के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में अगस्त 2014 में 3 दिन के लिए खरदोडला दर्रे का भ्रमण किया। इस यात्रा का उद्देश्य अमची पद्धति से औषधि बनाने के लिए विभिन्न आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की पहचान कराना है। इसके लिए उन्होंने विविध प्रकार की जड़ी-बूटियों का संग्रह करके प्रदर्शन किया। उन जड़ी-बूटियों के नमूनों को अलबम में सुरक्षित रखा गया है। भ्रमण के दौरान कच्चे द्रव्यों को जमा करते हुए अनेक प्रकार की जड़ी बूटियों की पहचान की गयी।



संस्थान के अमची विभाग ने इस वर्ष के दौरान प्रायोगिक कक्षा के द्वारा विभिन्न अमची औषधियाँ स्वयं बनायीं, जिनमें चूर्ण, गोली और अर्क सम्मिलित हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान उन औषधियों को रोगियों के लिए निःशुल्क मुहैया कराया गया।

11. प्रकाशन:

संस्थान ने अब तक विभिन्न विषयों पर 80 महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है जिनमें अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का निबन्ध संकलन (लदाख-प्रभा) का प्रकाशन शामिल है। वर्ष 2014-15 के दौरान संस्थान ने 'सप्तार्थिक-चित्ताभ्यास-नामक-महायानोपदेश', 'त्रिकोणीय बहुभाषी शब्दकोश', 'कालचक्र का एक परिचय', 'वेताल की अद्भुत कथा' तथा भूमि मार्ग एवं सिद्धान्त-रत्नसोपान छः ग्रन्थों का प्रकाशन किया।

12. शोध कार्य:

संस्थान ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पद्धति पर बौद्ध धर्म तथा चार भोट बौद्ध सम्प्रदायों पर शोध हेतु चार शोधवृत्तियों की व्यवस्था की है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अभी तक नौ शोध छात्रों को पी-एच.डी. (विद्यावारिधि) की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। संस्थान विश्वविद्यालय की घोषणा के अन्तिम चरण में है, इस को ध्यान में रखते हुए दिनांक 13 मार्च 2015 को आयोजित प्रबंधकारिणी के बैठक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की तर्ज पर शोधवृत्तियों की संख्या चार से आठ तक बढ़ाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

13. परिसर:

यह संस्थान लेह शहर के दक्षिण की ओर आठ किलोमीटर दूर चोगलमसर में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसके दो परिसर हैं—नया और पुराना परिसर। पुराना परिसर 23 कनाल के क्षेत्रफल में स्थित है। इसमें कक्षा 6 से 8 तक के कुल 236 कनिष्ठ छात्रों के लिए कक्षाएँ चलायी जाती हैं। यह विद्यालय प्रशिक्षित स्नातक (टी.जी.टी.) तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से एक प्रधान अध्यापक के प्रभार में चलाया जाता है। इसमें शैक्षिक विभाग, एक छोटा सभाभवन, कार्यालय तथा बच्चों के लिए पुस्तकालय हैं। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र जैसी संस्थान की कुछ परियोजनाएँ पुराने परिसर में कार्यरत हैं।

नया परिसर पुराने परिसर से आधा किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस में संस्थान का पृथक् कक्षा-भवन, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय तथा तीन छात्रावास, हैं जिनमें सौ-सौ विद्यार्थियों के रहने की क्षमता है, जो भिक्षुओं, छात्रों तथा छात्राओं को रहने के लिए अलग-अलग दिये गये हैं। नये परिसर में 60 कर्मचारी आवास हैं और एक अतिथि भवन है, जिसमें 20 अतिथि रुक सकते हैं। इसी प्रकार नये परिसर में एक खेल-मैदान है, जो दर्शकों के बैठने की जगह, प्रसाधन कक्ष, भण्डार आदि सुविधाओं से युक्त है। संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए 700 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभाभवन है। दार्शनिक वादविवाद भवन, विद्यार्थियों के मनोरंजन केन्द्र का निर्माण कार्य प्रगति पर है और 2015 के मध्य तक पूरा किया जाने की सम्भावना है।



14. पुस्तकालयः

संस्थान का महत्वपूर्ण अंग इसका पुस्तकालय है, छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस पर निर्भर रहते हैं। बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक भी इस पुस्तकालय में आते रहते हैं। संस्थान के पुस्तकालय को नये परिसर में स्थानान्तरित कर लिया गया है, जिसके लिए तीन मंजिला पृथक् भवन बना है। पुस्तकालय को 'स्लिम थुमी सॉफ्टवेअर' लगाकर 'कॅम्प्यूटराइज' किया गया है। इस पुस्तकालय में तीन विभाग हैं— (1) सामान्य विभाग, (2) भोट अथवा सुंगबुम विभाग और (3) सन्दर्भ विभाग। इस पुस्तकालय में कुल 31,192 ग्रन्थ, भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं में धार्मिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, काव्य एवं सामाजिक विषयों पर उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में विश्वकोश, शब्दकोश तथा वार्षिक ग्रन्थों का संग्रह भी है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने रु.1.82 लाख की कुल 574 पुस्तकें क्रय की गयीं। पुस्तकालय 20 भारतीय एवं विदेशी शोध पत्रिका/समसामयिक पत्रिकाओं का ग्राहक बना। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की भाषाओं में अन्य 15 प्रकार की पत्रिकायें क्रय की गईं हैं। विद्यार्थियों एवं पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय 8 प्रकार के समाचारपत्रों का भी क्रय करता किया जाता है।

15. संग्रहालयः

संस्थान ने एक छोटा पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया है। विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों का संचय कर इस संग्रहालय में स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में लदाख की बौद्ध कलाकृतियों, चित्रों और छायाचित्रों के साथ-साथ विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के पुरातात्विक अवशेषों के नमूने संरक्षित किये गये हैं। लदाख में यह अपने ढंग का एक अनूठा संग्रहालय है, जो प्रति वर्ष यहाँ बड़ी संख्या में आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

16. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रियाकलापः

(क) स्व. ग्याल्झास बकुला रिन्पोछे व्याख्यान माला: स्व. कुशोक बकुला रिन्पोछे लदाख के एक प्रकाण्ड विद्वान् एवं समाज-सुधारक थे। उन्होंने लदाख के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्रदेश की गरीब एवं ज़रूरतमंद जनता के कल्याण एवं निर्धनता के उन्मूलन में लगाया। जम्मू-कश्मीर सरकार के मन्त्रिमण्डल में उनका एक विशेष राजनीतिक पद होने के अतिरिक्त वे भारत की लोकसभा के सदस्य तथा मंगोलिया में भारत के राजदूत भी रहे। उनकी सामाजिक सेवा के आधार पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। उनके प्रयासों से ही सन् 1959 में इस प्रदेश की बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं विकासार्थ इस केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की स्थापना हुई, जो पहले बौद्ध दर्शन विद्यालय के रूप में जाना जाता था। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्ध समिति ने दिनांक 27-02-2004 की अपनी बैठक में उनकी स्मृति में एक विशेष व्याख्यान



माला प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। प्राप्त विवरण के अनुसार संस्थान में एक व्याख्यान का आयोजन 9 जून 2014 को किया गया जिसके लिए प्रकाण्ड बौद्ध विद्वान गलदन ठि रिनपोछे जी को आमन्त्रित किया गया था। उन्होंने एक विशेष विषय 'काल चक्र अभिषेक का परिचय' पर व्याख्यान दिया। दूसरा व्याख्यान दिनांक 4 अगस्त, 2014 को केन्द्रीय बौद्ध विद्यालय संस्थान, लेह के भूतपूर्व प्राचार्य डॉ. टशी पलजोर जी ने 'बोधिचित्त' विषय पर दिया। इन व्याख्यानों में बड़ी संख्या में संस्थान के सदस्य, कर्मचारी, विद्यार्थी और अन्य जिज्ञासु जन उपस्थित थे।

(ख) **विदेशी बौद्ध विद्वानों का व्याख्यान:** विद्यार्थियों में शैक्षिक रुचि उत्पन्न कराने तथा बौद्ध महायान के विषय में विदेशी विद्वानों के विचार को जानने के लिए संस्थान ने एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया, जिस के लिए अमेरिका के भिक्षु डॉ. बेस्सी केरजेन तथा इंग्लैंड के विद्वान डॉ. पॉल केरबर्ड को आमन्त्रित किया, जो चौदहवें दलाई लमा जी द्वारा 2014 के कालचक्र अभिषेक के लिए लदाख आये थे। इस कार्यक्रम में कर्मचारी तथा विद्यार्थियों ने भाग लिया।

(ग) **पूज्य कटोग ग्यतसे रिनपोछे जी का व्याख्यान:** संस्थान ने दिनांक 29 जुलाई 2014 को पूज्य कटोग ग्यतसे रिनपोछे जी को संस्थान में आमन्त्रित किया। उन्होंने कर्मचारी तथा विद्यार्थियों को विशेष व्याख्यान दिए। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करने को कहा और अध्यापकों को भव्य शिक्षा व्यवसाय के सम्बन्ध में सलाह दी।

(घ) **दवाईयों की सुविधा:** संस्थान में एक अपना दवाखाना है, जहाँ से विद्यार्थी, अध्यापक एवं कर्मचारियों को दवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए एक अस्थायी डॉक्टर की नियुक्ति की गयी है जो एक दिन के अन्तर पर यहाँ आते हैं। एक परिचारिका एवं एक सहपरिचारिका उक्त डॉक्टर की सहायता करती हैं। यह दवाखाना अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। सत्र के दौरान संस्थान ने रु. 1.92 लाख के दवाईयाँ खरीदकर विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए विद्यार्थी एवं कर्मचारियों को दीं।

(ङ) **वार्षिक क्रीड़ा-प्रतियोगिता:** विद्यार्थियों को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से संस्थान ने गत वर्ष 24 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2014 तक आठ दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार के खेल-कूदों की गतिविधियों का प्रबंध किया गया। क्रीड़ा प्रतियोगिता तीन सदनों, यथा- नालन्दा, विक्रमशिला एवं तक्षशिला में कराई जाती है। इन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा विजेताओं को वार्षिकोत्सव के दौरान पुरस्कारों एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।

(च) **वार्षिक पत्रिका:** संस्थान 'रिगपे दुद्चि' नामक एक वार्षिक पत्रिका तथा 'लोमे गछल' नामक एक मासिक समाचार-पत्रक प्रकाशित करता है जिनमें संस्थान के अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर अपना लेख प्रस्तुत करते हैं। विगत वर्ष में संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न क्रिया-कलापों में प्राप्त किये गये चित्रों को इन में विशेष रूप से प्रकाशित किया। यह सम्पूर्ण रूप से एक सांस्थानिक पत्रिका है एवं इसमें पूर्ण रूप से संस्थान के स्वरूप तथा उद्देश्य को ही सम्मिलित किया जाता है।



(छ) **विज्ञान व्याख्यान शिविर:** संस्थान के 14 छात्रों ने 14वीं कोर सेना के सहयोग से श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, जम्मू द्वारा दिनांक 11 और 12 जुलाई 2014 को आयोजित कार्यक्रम 'विज्ञान प्रेरणा व्याख्या शिविर' में सक्रिय रूप से भाग लिया।

(ज) **जलवायु परिवर्तन पर कार्यशाला:** कक्षा पूर्वमध्यमा द्वितीय के छात्रों ने दिनांक 20 और 21 जून 2014 को अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, जम्मू विश्वविद्यालय और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग विषय पर आयोजित कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

17. पाठ्यक्रम:

प्रारम्भ में संस्थान में एक दस वर्षीय पाठ्यक्रम प्रचलित था जिसके अन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, बौद्ध दर्शन एवं भोटी भाषा की पढ़ाई होती थी। सन् 1973 में संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध हुआ तथा संस्थान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त प्रदेशीय छात्रों की आवश्यकतानुसार एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया। पाठ्यक्रम पर समय-समय पर पुनर्विचार करने के लिए विश्वविद्यालय ने एक अध्ययन समिति गठित की है। पाठ्यक्रम की समीक्षा तथा नये पाठ्यक्रम को लागू करने आदि के लिए समिति की बैठक वर्ष में एक बार होती है।

संस्थान के पाठ्यक्रम में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, भोट साहित्य एवं बौद्ध दर्शन अनिवार्य विषय हैं। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, पालि, इतिहास, तुलनात्मक दर्शन, अमची/तिब्बती चिकित्साविद्या, काष्ठकला, शिल्पकला तथा चित्रकला वैकल्पिक विषय के रूप में हैं। विश्वविद्यालय द्वारा गठित अध्ययन समिति के अनुमोदन पर संस्थान के पाठ्यक्रम को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने स्वीकृत किया है।

सन् 1984 ई. से जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालयों एवं राज्य विद्यालय शिक्षा समिति ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रमाणपत्रों को पारस्परिक आदान-प्रदान के तौर पर मान्यता प्रदान करते हुए निम्नलिखित परीक्षाओं से समकक्षता प्रदान की है—

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| 1. पूर्वमध्यमा | मैट्रिक (हाई स्कूल) |
| 2. उत्तर मध्यमा | उच्चतर माध्यमिक (भाग-2) |
| 3. शास्त्री अंग्रेजी के साथ | बी.ए. (स्नातक) |
| 4. आचार्य | एम.ए. (स्नातकोत्तर) |

प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान संस्थान ने तिब्बत के महायान सम्प्रदाय शास्त्रों को अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में कक्षा शास्त्री और आचार्य के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। इस कार्य का विभाग के सदस्यों, विद्यार्थियों तथा लदाख के अन्य विद्वानों ने स्वागत किया है।



18. छात्रवृत्ति:

संस्थान में अध्ययनरत छात्रों में से कुल 708 छात्रों पर रु. 685.00 से 845.00 के बीच प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति के रूप में वर्ष 2014-2015 के दौरान कुल रु. 51.66 लाख खर्च किये गये।

उपरोक्त छात्रवृत्ति के अतिरिक्त, लदाख के विभिन्न क्षेत्रों, हिमाचल के लाहुल-स्पीति तथा जम्मू और कश्मीर के अन्य क्षेत्रों में संस्थान द्वारा चालाए जा रहे 50 गोनपा/श्रामणेरीका विद्यालयों के कुल 946 छात्रों को रु. 78.91 लाख छात्रवृत्ति के रूप में वितरित किये गये।

19. विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण:

संस्थान में तथा इस के फीडर गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी लदाख के सबसे पिछड़े और दूरदराज क्षेत्रों से हैं और वे जनजाति अनुसूची के हैं। तदनुसार, संस्थान ने ट्रिब्यूनल उप-योजना के अन्तर्गत, संस्थान के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक एवं उत्तरपुस्तिकाओं का निःशुल्क वितरण करने की व्यवस्था की है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस वर्ष के दौरान संस्थान ने 12.99 लाख रुपये की पाठ्यपुस्तकें एवं उत्तरपुस्तिकायें खरीदीं और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान तथा शाखा विद्यालयों एवं फीडर गोनपा/श्रामणेरीका विद्यालयों के विद्यार्थियों में निःशुल्क वितरित कीं।

20. परीक्षा परिणाम:

संस्थान की कक्षा छठी से आठवीं तक की परीक्षाएँ संस्थान द्वारा आयोजित की गईं जबकि पूर्वमध्यमा से आचार्य तक की परीक्षाएँ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। परीक्षा परिणाम 83.33 प्रतिशत रहा। वर्ष 2014-15 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 35 पर परिशिष्ट के रूप में है।

कनिष्ठ छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए प्रति वर्ष मई, अगस्त और नवम्बर में क्रमशः त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित करने के लिए संस्थान द्वारा आवश्यक प्रबंध किये गये हैं।

21. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय:

अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय चला रहा है जो इस प्रदेश में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये विद्यालय सम्बन्धित गोनपाओं के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। तदनुसार उक्त गोनपा कक्षाओं एवं छात्रावास की सुविधाओं के साथ-साथ धार्मिक विधियों की शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान की ओर से प्रवेश प्राप्त छात्रों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों के लिए एक से तीन शिक्षकों की व्यवस्था की जाती है। इस के अतिरिक्त साज-सामान, लेखन-सामग्री, पाठ्यपुस्तक एवं कापी और प्रत्येक



विद्यार्थी के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त शिक्षक विद्यार्थियों को गोनपा-विषयक शिक्षा के साथ-साथ अन्य आधुनिक प्रारम्भिक शिक्षा, जैसे- भोटी भाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष लदाख के विभिन्न गोनपाओं में स्थापित 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कुल 946 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। वर्ष 2014-15 के विद्यार्थियों के नामांकन का विवरण विद्यालयवत् एवं कक्षावार पृष्ठ संख्या 36 पर परिशिष्ट के रूप में है।

22. वार्षिकोत्सवः

संस्थान के 55वें वार्षिकोत्सव का आयोजन 23 नवम्बर 2014 को संस्थान के परिसर में पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस उत्सव में संस्थान की परीक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा संस्थान की विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा- निबंध प्रतियोगिता, कविता-आवृत्ति प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता, खेलकूद गतिविधि, सांस्कृतिक गतिविधि, प्रश्नमंच इत्यादि में भाग लेने वाले विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। हिमालय क्षेत्र के महान विद्वान पूज्य तोगदन रिनपोछे जी उक्त समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे, उन्होंने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये। श्री छेरिड नमग्यल शुनुए राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के माननीय सदस्य, भारत सरकार ने सम्मानित अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त लदाख के अनेक विद्वान एवं अतिथि भी उक्त समारोह में उपस्थित थे। यह समारोह राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

23. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें:

प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष संस्थान में निम्नलिखित उत्सव एवं कार्य-कलापों का बड़े उत्साह के साथ आयोजन किया गया:

(क) श्रावत व्रत डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म-दिवसः

दिनांक 14 अप्रैल 2014 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 124वीं जयन्ती मनाई गई। अनेक विद्वानों एवं विद्यार्थियों ने इस समारोह में भाग लिया और उनकी जीवनी एवं उपलब्धि पर प्रकाश डाला। डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्यालय संस्थान इस समारोह में सभापति के रूप में उपस्थित थे।

(ख) डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवसः

संस्थान ने दिनांक 5 सितम्बर 2014 को भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती अध्यापक दिवस के रूप में मनाई। इस अवसर पर अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। अध्यापकों ने विद्यार्थियों द्वारा डॉ. राधाकृष्णन की सिद्धान्तों एवं विचारों का अनुसरण करने तथा अपने जीवन में कार्यान्वित करने के लिए बल दिया।



(ग) हिन्दी दिवस:

संस्थान ने दिनांक 14 सितम्बर 2014 को हिन्दी दिवस मनाया, जिस में हिन्दी में विभिन्न प्रकार की साहित्यक प्रतियोगिताओं का संचालन किया गया, जैसे निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता तथा व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इस में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस के अतिरिक्त विद्वानों ने हिन्दी भाषा के महत्त्व पर व्याख्यान दिया।

(घ) चार आर्यसत्य उपदेश के प्रतिमान का प्रतिष्ठान:

संस्थान ने मूर्तिकला और चित्रकला विभाग के सहायता से परिसर में चार आर्यसत्य उपदेश का एक आदर्श बनवाया। हाल में बनवाया गया चार आर्यसत्य उपदेश के आदर्श का अभिषेक समारोह दिनांक 16 जुलाई 2014 को परम पवन चौदहवें दलाई लामा जी द्वारा आयोजित किया गया। इस समारोह के पश्चात् उन्होंने संस्थान के कर्मचारी तथा छात्रों को आशीर्वाद दिया। श्री नवांग रिगज़िन जोरा, माननीय मंत्री, शहरी विकास, जम्मू-कश्मीर सरकार इस अवसर पर उपस्थित थे।

(च) स्वच्छ भारत अभियान:

भारत सरकार के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पहल पर सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ किया गया। तदनुसार, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्था, लेह के कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने उपरोक्त शुभारंभ को ध्यान में रखते हुए कार्यालय, कक्षाओं परिसर और आसपास के क्षेत्रों का निम्नलिखित अवसरों पर सफाई की।

क) विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2014

ख) महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर 2014

(छ) लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ, एक सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर:

यूनेस्को (UNESCO) ने सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची स्थापित की है। इस का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण विश्वव्यापी सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर का उत्तम संरक्षण तथा उनके महत्व की जागरूकता को सुनिश्चित करना है। सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची के कार्यक्रम का प्रारंभ सूक्ष्म धरोहर सुरक्षा के महत्व की ओर ध्यान अंकित करने के लक्ष्य के साथ हुआ जिन को युनेस्को (UNESCO) द्वारा सारभूत अंग एवं सांस्कृतिक भिन्नता का एक पात्र और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में चिह्नित किया गया है। इस सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर को जीवित धरोहर भी कहा जाता है, अर्थात् व्यावहारिक रूप के प्रतीक, अभिव्यक्ति, ज्ञान, एक व्यक्ति का कौशल तथा उपकरण, वस्तुएं, शिल्पतथ्य और सांस्कृतिक अन्तरिक्ष इन के साथ सम्बद्ध है जिन को सम्पूर्ण समाज/समुदाय/व्यक्ति उनकी अपनी सांस्कृतिक धरोहर के भाग के रूप में मान्यता देते हैं। इस प्रकार आई.सी.एच. निम्न किसी भी क्षेत्र में भी प्रकट किया जा सकता है— मौखिक परम्परा तथा भाषा की अभिव्यक्ति, पालन करने वाली कला। सामाजिक प्रथा, कर्मकाण्ड एवं त्यौहार, प्रकृति एवं सम्पूर्ण विश्व तथा पारम्परिक शिल्प-कौशल सुरक्षित रखने का ज्ञान और अनुष्ठान। तदनुसार सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को यूनेस्को (UNESCO) की



प्रतिनिधि सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची (द्वितीय दायरा) में उल्लिखित करने के लिए नामांकन फाइल तैयार करने का काम संस्थान को सौंपा है। संस्थान ने नामांकन फाइल 60 मिनट अवधि के प्रालेख पोषण श्रव्यदृष्टि तथा अंग्रेजी में 10 मिनट अवधि वाले छोटे रूपान्तर को आंगुलिक चलचित्र (डिजिटल विड्यू) रूप में तैयार किया है और उसे मॉडल ऐं'जैन्स अइ.जी. एन.सी.ए. के माध्यम से युनेस्को (UNESCO) के सामने प्रस्तुत किया है। युनेस्को (UNESCO) ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को चुना। वर्ष 2012 में समस्त हिमालय के लदाख क्षेत्र में स्थित बौद्ध पवित्र ग्रन्थों के पाठ को मानवता की सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची में सम्मिलित किया।

लदाख के बौद्ध मठों द्वारा किये गये मन्त्र पाठ में निम्नगोनपाओं का मन्त्र पाठ समाविष्ट है:

क्रमिक संख्या	गोनपा का नाम	आलाप की विषयवस्तु
1.	हेमिस गोनपा	रिगमा चुटुग
2.	टिगसे गोनपा	शरकंगरिमा
3.	स्पितुग गोनपा	नसू-तन्
4.	फ्यांग गोनपा	चोत्
5.	माटो गोनपा	कुनरिग

24. अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन:

- (क) **श्रीमती अरविन्द मंजीत सिंह, संयुक्त सचिव, भारत सरकार:** श्रीमती अरविन्द मंजीत सिंह, भारत सरकार के संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय (अध्यक्ष, प्रबंधकारिणी, के.बौ.वि.सं.) ने दिनांक 3 अप्रैल 2014 को संस्थान का दौरा किया। संस्थान में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। उन्होंने प्रस्तावित बुद्ध महोत्सव के लिए तैयार मुखौटा नृत्य, रेत मंडला और मक्खन संरचना की रिहर्सल देखी।
- (ख) **श्री नवीन महाजन, प्रधान प्रेक्षक:** श्री नवीन महाजन, मुख्य निरीक्षक, लदाख संसदीय निर्वाचन ने दिनांक 22 अप्रैल 2014 को संस्थान का दौरा किया और संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में चर्चा की।
- (ग) **एन.ए.ए.सी. के सहकर्मी दल का आगमन:** प्रो सी.पी. सिंह, भूतपूर्व कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, एम.पी. की अध्यक्षता में एक सहकर्मी दल ने संस्थान के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के लिए 2 से 5 सितंबर 2014 को संस्थान का दौरा किया। प्रो. सिद्धार्थ सिंह, बी.एच.यू., तथा प्रो के.टी.ओ. सरावो, दिल्ली विश्वविद्यालय ने सहकर्मी टीम के सदस्य के रूप में भाग लिया। डॉ. सुजाता शान बाग, सहायक सलाहकार, एन.ए.ए.सी. कार्यक्रम का समन्वय किया। तदनुसार, सहकर्मी दल की सिफारिश पर राष्ट्र मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बंगलौर ने के.बौ.वि.सं. लेह को ग्रेड-ए के साथ मान्यता प्रदान की।
- (घ) **यू.जी.सी. विशेषज्ञ समिति की बैठक:** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की बैठक प्रो. एच. पी. दीक्षित, भूतपूर्व कुलपति, इग्नू के अध्यक्षता में दिनांक 18 नवम्बर 2014



को आयोजित की गई, जिस में यह सिफारिश करनी थी कि क्या केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह विशेष रूप से अध्ययन और अनुसंधान के विशिष्ट क्षेत्र में समर्पित है या नहीं तथा इस संस्था को डी-नोवो कोटि के अधीन विचार किया जा सकता है या नहीं। प्रो. वंगछुग दोरजे नेगी, निदेशक और श्री छेरिड मोटुप, प्रशासनिक अधिकारी ने संस्थान की ओर से संस्थान के तथ्यों एवं आकार को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। तदनुसार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विशेषज्ञ समिति ने अपने निरीक्षण के अंतर्गत स्वीकार किया कि के.बौ.वि.सं., लेह विशेष रूप से पारंपरिक अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दे रहा है, जो कि अन्यत्र नहीं है। उन्होंने डीम्ड-युनिवर्सिटी की प्रतिष्ठा देने हेतु डी-नोवो कोटि के अधीन विचार करने के लिए सिफारिश की।

25. बौद्ध दार्शनिक शास्त्र-अनुवाद परियोजना:

भोटी भाषा में हजारों की संख्या में अनेक ऐसे बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ हैं जिन में भगवान बुद्ध के उपदेश सम्मिलित हैं और भारतीय तथा तिब्बती पण्डितों द्वारा विरचित अनेक ग्रन्थ भोटी भाषा में उपलब्ध हैं। अभोटी भाषी विद्वान तथा शोध कर्ता इन बहुमूल्य ग्रन्थों से लाभ नहीं उठा पा रहा है। अतः संस्थान ने विद्वानों, शोध कर्ताओं और अन्य रुचि रखने वालों के लाभ के लिए संस्थान की प्रबंधकारिणी के स्वीकृति से बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थों को हिन्दी में अनुवाद करने के लिए एक छोटी सी अनुवाद परियोजना का आरंभ किया है। यह परियोजना मार्च 2009 से चालू हो चुकी है। वर्तमान में एक मुख्य सम्पादक तथा तीन शोध सहायक अनुबन्ध के आधार पर इस परियोजना में कार्यरत हैं। इस परियोजना के अधीन अब तक पाँच ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। तीन अन्य ग्रन्थों का अनुवाद प्रगति पर है और शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

26. हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्व-कोश के संकलन का आरम्भ:

संस्थान की प्रबन्ध-समिति ने प्रो. रमेश चन्द्र तिवारी की देख-रेख में हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्व कोश के निर्माण की परियोजना का अनुमोदन किया है। परियोजना का कार्य पाँच वर्ष का है एवं 10 भागों में विश्वकोश तैयार करने की योजना है। विद्वानों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर इस परियोजना का कार्यारम्भ हो चुका है। उक्त योजना मुख्य सम्पादक के निरीक्षण में दो सम्पादक एवं तीन शोध-सहायकों के सहयोग से प्रगति पर है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने इस विश्व कोश के दो खण्डों को प्रकाशित किया है, जो लदाख क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। अन्य खण्डों का काम प्रगति पर है। दिनांक 19 दिसम्बर 2011 को हुई केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबंधकारिणी की बैठक में इस परियोजना के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसकी अवधि अगले पाँच साल के लिए बढ़ा दी गई है।

27. विदेशी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था:

संस्थान ने विदेशी विद्यार्थियों के लिए वरिष्ठ संकाय सदस्यों को नियुक्तकर एक सप्ताह बौद्धदर्शन, विधि तथा समाधि पाठक्रम का प्रबन्ध किया। इस में वर्ड लर्निंग इनडिय प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से दुनियाँ के



विभिन्न देशों से 28 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा शिक्षा प्रदान करने के बाद बौद्धदर्शन पर विस्तार से चर्चा हुई, जो विदेशी विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक रही। उन्होंने भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रमों का प्रबन्ध करने का माँग की।

28. क-ग्युर का पाठ:

संस्थान ने दिनांक 6 जून 2014 को सभी प्राणियों के शांति, समृद्धि और खुशी के लिए कर्मचारियों और छात्रों को शामिल करके क-ग्युर जो 108 पोथियों में है और जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेश सम्मिलित हैं, का पाठ करने का एक कार्यक्रम आयोजित किया। 108 पोथियों का पाठ एक दिन में सम्पन्न किया गया। यह एक बड़ी कामयाबी थी।

29. वाराणसी में बौद्ध महोत्सव:

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश पर संस्थान ने दिनांक 25 से 29 दिसंबर 2014 तक सारनाथ, वाराणसी में आयोजित बौद्ध महोत्सव में भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम प्रस्तुत किये:

- क) *छमस नक्षत्र*: हेमिस गोनपा के 15 भिक्षुओं के समूह ने पारंपरिक रंगीन कपड़े पहनकर छम नृत्य का प्रदर्शन किया, जिसकी स्थानीय लोगों तथा पर्यटकों ने सराहना की।
- ख) *थंका चित्रकारी का प्रदर्शन*: संस्थान के दो कलाकारों ने थंका चित्रकारी का प्रदर्शन किया और रूचि रखने वालों के लिए थंका बनाने की कला का प्रदर्शन किया।
- ग) *पुस्तक की छोटी दुकान*: संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के विक्रय तथा प्रचार के लिए पुस्तकों की एक छोटी दुकान लगाई गई।

30. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र:

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र के रूप में लदाख क्षेत्र के लिए “पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र” पद प्रदान किया है। तदनुसार संस्थान ने अनुबन्ध के आधार पर विद्वानों की नियुक्ति कर उन्हें काम सौंपा है। वर्तमान में पाँच कुशाग्रबुद्धि कर्मचारी इस योजना पर मार्च से नवम्बर तक काम कर रहे हैं। उक्त योजना के प्रलेख पोषण का काम सख्त ठण्ड मौसम के कारण दिसम्बर से फरवरी तक तीन महीने के लिए बन्द रहता है। संस्थान ने लदाख क्षेत्र के 2041 मठों, महलों एवं व्यक्तियों से लगभग 28,417 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया है तथा प्रयास है कि इस क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों का संग्रह किया जा सके। इसके अतिरिक्त संस्थान लदाख क्षेत्र के विभिन्न विहारों में उपलब्ध दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण भी करता है। अब तक 19,012 पन्नों का संरक्षण किया जा चुका है।



31. उपाधि/उपाधि-पत्र प्राप्त करने के बाद छात्रों की नियुक्ति:

संस्थान पी-एच. डी.(विद्यावारिध) उपाधि, भोट बौद्धदर्शन, संस्कृत बौद्ध दर्शन, बौद्ध पुराणेतिहास इतिहास, भोट साहित्य तथा तुलनात्मक दर्शन विषयों में आचार्य (एम.ए. से समकक्षता), शास्त्री (बी.ए. से समकक्षता), उत्तर मध्यमा (+2 से समकक्षता) और पूर्वमध्यमा (मैट्रिक से समकक्षता) की उपाधि प्रदान करता है। इस के अतिरिक्त भोट चिकित्सा, थंका/चित्रकला,मूर्ति-कला और काष्ठकला में भी छः वर्ष की उपाधि दी जाती है। यह अवलोकन किया गया है कि जिन विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से ऊपर बताये गये पाठ्यक्रमों में उपाधि प्राप्त की है वे बेरोजगार नहीं है। जिन विद्यार्थियों ने इस संस्थान से उपाधि प्राप्त की है वे विशेषकर शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, और निजी स्कूलों में आसानी से नियुक्त हो जाते हैं। जिन उम्मीदवारों के पास ऊपर की उपाधियाँ हों उन्हें आकाशवाणी और दूरदर्शन विभागों में नियुक्त होने का अच्छा अवसर है क्योंकि इन विभागों में उन उम्मीदवारों को वरीयता दी जाती है जिन को स्थानीय भाषा का अच्छा ज्ञान हो। संस्थान गर्व महसूस करता है कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान का एक पूर्व छात्र कश्मीर प्रशासनिक सेवा और संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से भर्ती होकर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अच्छे स्थानों पर विराजमान है। जम्मू एवं कश्मीर उच्च न्यायालय में प्रथम लदाखी आदरणीय श्री टशी रबस्तन की न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुई है, उन्होंने उत्तर मध्यमा तक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह में अध्ययन किया है।

इस के अतिरिक्त संस्थान के पूर्व छात्र पूरे भारत में सेना और अर्ध सैनिक बलों में देश के लिए सेवा कर रहे हैं। संस्थान के कुछ पूर्व छात्र विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन कलकत्ता, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि प्रख्यात विश्वविद्यालयों में काम कर रहे हैं। जम्मू और कश्मीर के पुलिस विभाग में अनेक ऐसे अधिकारी हैं जिन्होंने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधि प्राप्त की हैं। के.बो.वि.सं., लेह की शाखा और फीडर स्कूल केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के पूर्व छात्रों को नियुक्त कर चलाये जा रहे हैं, जो इस क्षेत्र की संस्कृति और विरासत के संरक्षण तथा पदोन्नति के लिए उपयोगी है।

भोट चिकित्सा में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी केन्द्र प्रायोजित योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' के अधीन राज्य के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत हैं, जो पूरे क्षेत्र में ग्रामीण मरीजों को देखता है।

थंका/चित्रकला,मूर्ति-कला और काष्ठकला में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी स्थानीय लोग तथा लदाख में आये पर्यटकों से थंका, मूर्ति और लकड़ी पर नक्काशी का काम करके अच्छी खासी धनराशि कमा रहे हैं। इस के अतिरिक्त जिन उम्मीदवारों ने ऊपर बतायी गई उपाधियाँ प्राप्त की हों वे उन संस्थाओं में प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त होते हैं, जहाँ पर समान पाठ्यक्रम हों।

इस प्रकार हजारों विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधियाँ प्राप्त की है और उन में से कोई भी बेरोजगार नहीं है। यह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की एक महान् उपलब्धि है।



32. डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार:

- (क) *संक्षिप्त इतिहास*: जंस्कार बौद्ध संघ के निमन्त्रण पर सन् 1980 में पहली बार परम पावन दलाई लामा जी जंस्कार पधारे थे। उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता का अनुभव करते हुए एक विद्यालय की स्थापना के लिए जंस्कार बौद्ध संघ को कुछ धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ ने इस क्षेत्र के निर्धन एवं जरूरतमंद छात्रों के कल्याण के लिए सितम्बर वर्ष 1984 में डुजिंग फोटंग में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ प्रारंभ में कुल 101 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा तीन अध्यापकों को नियुक्त किया गया। दूर-दराज के क्षेत्रों के छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबंध भी किया गया। जंस्कार के बौद्ध निवासियों ने भी इस विद्यालय के कोष के लिए धन जुटाया। परम पूज्य दलाई लामा जी ने वर्ष 1988 में दूसरी बार जंस्कार पधारने पर विद्यालय के विकास के लिए पुनः धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ और क्षेत्र की जनता ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को इस विद्यालय के महत्व के बारे में अवगत कराया तथा उनसे निवेदन किया कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की तरह इस विद्यालय का प्रबंधन भारत सरकार अपने अधीन कर ले। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने मार्च/अप्रैल 1988 में अपनी जंस्कार यात्रा के दौरान वहाँ के नागरिकों की भावनाओं का समादर करते हुए “डुजिंग फोटंग विद्यालय” को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध करने की घोषणा की थी। तदनुसार भारत सरकार ने नवम्बर, 1989 से इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शाखा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। तब से यह विद्यालय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के वित्तीय एवं प्रशासनिक नियन्त्रण में चलाया जा रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक कुल 304 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। डुजिंग फोटंग विद्यालय के परिसर में शैक्षिक विभाग, एक छोटा सा पुस्तकालय, एक छोटा बहुउपयोगी सभा भवन, 100 छात्रों के रहने के लिए छात्रावास, कर्मचारी आवास और एक खेल का मैदान है। जो विद्यार्थी छात्रावास में नहीं रहते हैं, उनको उठाने के लिए एक स्कूल बस भी है। जंस्कार घाटी एक अलग क्षेत्र है और सर्दियों में 6 महीने के लिए लेह और कारगिल से कटा रहता है।
- (ख) *परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार)*: डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के कक्षा पहली से आठवीं तक के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाएँ प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की गईं। कक्षा नवीं तथा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाएँ के.बौ.वि.सं. लेह, के माध्यम से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। वहाँ के विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए लेह आना पड़ता था और अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर वहाँ एक परीक्षा केन्द्र स्थापित किया गया। वर्ष 2014-2015 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 39 पर परिशिष्ट के रूप में है।
- (ग) *अन्य क्रिया-कलाप (डी.पी.एस., जंस्कार)*: यह स्कूल विविध शैक्षिक क्रिया-कलापों का आयोजन कर रहा है, जैसे- वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता, साहित्यिक प्रतियोगिता, ऐतिहासिक स्थलों/विहारों का दर्शन, राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों का जन्म दिवस मनाना, मासिक व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इसके



अतिरिक्त इस स्कूल में एक छोटा सा ग्रन्थालय है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ग्रन्थों का एक अच्छा संग्रह उपलब्ध है।

- (घ) *कर्मचारी संख्या:* प्राप्त विवरण अनुसार डुजिंग फोटंग विद्यालय के कर्मचारियों की संख्या पृष्ठ संख्या 40 पर परिशिष्ट के रूप में है।

33. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.)

(क) *संक्षिप्त इतिहास:*

हिमालय क्षेत्र क्रमशः लाहुल, स्पीति, किन्नौर, पंगी, कुल्लू और मनाली की बहुमूल्य बौद्ध कला, भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, लाहुल-स्पीती (हि.प्र.) की स्थापना सन् 1976 में हुई। सन् 1959 से पूर्व इस क्षेत्र के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। परन्तु 1959 की ऐतिहासिक घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। अतः नवशिष्यों को पारम्परिक बौद्ध शिक्षा देने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग अस्तित्व में आया। आरम्भ में यह विद्यालय यहाँ के निवासियों से धन जुटाकर चलाया जाता था। तत्पश्चात् भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय ने बौद्ध/तिब्बती संस्था विकास के वित्त सहयोग योजना के अर्न्तगत कुछ वित्तीय सहयोग दिया। इस क्षेत्र के लोगों ने इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह और केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी की प्रणाली के अनुसार भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार लेने के अथक प्रयास किये। परन्तु यह भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार नहीं ले सका।

तथापि वर्तमान में, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी की संस्तुति के आधार पर इस विद्यालय को डुजिंग फोटंग विद्यालय (डी.पी.एस.) जंस्कार के समान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के शाखा विद्यालय के रूप में अपने अधीन लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के पत्र सं. एफ./1-11/2004-बी.टी.आई. दिनांक 05-03-2010 के अनुसार बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपनी शाखा के रूप में ले लिया है। तब से इस विद्यालय के प्रशासन को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा चलाया जा रहा है।

वर्तमान में, इस विद्यालय में, कक्षा प्रथम से दसवीं कक्षा तक 37 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अपने शाखा विद्यालय के रूप में लेने के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावना है। यह विद्यालय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है और विद्यार्थियों की परीक्षा का आयोजन उक्त विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः प्रशिक्षित स्नातक, एक भोटी अध्यापक, एक बौद्ध दर्शन का अध्यापक, एक कार्यालय सहायक और तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत हैं।



कक्षाओं को चलाने के लिए विद्यालय के अपने भवन हैं और दुर्गम क्षेत्र से आये विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास भी है। डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के समान इस विद्यालय के कर्मचारियों का वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, साज-सामान और दिन-प्रति दिन का व्यय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा दिया जाता है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग):

इस विद्यालय की छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक की वार्षिक परीक्षाएँ प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की जाती हैं। कक्षा नवीं एवं दसवीं की वार्षिक परीक्षा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अयोजित की जाती है, जिससे की यह विद्यालय सम्बद्ध है। वर्ष 2014-2015 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 40 पर परिशिष्ट के रूप में है।

(ग) कर्मचारी संख्या:

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.) के कर्मचारी संख्या पृष्ठ संख्या 41 पर परिशिष्ट के रूप में है।

के.बौ.वि.सं. लेह के प्रबन्धक समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	श्रीमती अरविन्द मंजीत सिंह संयुक्त सचिव संस्कृति विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली	अध्यक्ष
2.	श्री स्वगत विश्वास जिला उपायुक्त, लेह	उपाध्यक्ष
3.	प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति द्वारा मनोनीत प्रतिनिधि जिससे संस्थान सम्बद्ध है	सदस्य
4.	श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण उपायुक्त सचिव (वित्त) संस्कृति विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली	सदस्य
5.	भारत सरकार के विदेशमंत्रालय के प्रतिनिधि	सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)
6.	भारत सरकार के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि	सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)
7.	मुख्य शिक्षा पदाधिकारी, लेह जम्मू-कश्मीर सरकार के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि	सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)
8.	गेशे कोनछोग नमग्यल अध्यक्ष, लदाख गोनपा संघ, लेह (लदाख गोनपा संघ के प्रतिनिधि)	सदस्य
9.	श्री छेवंग टिनले अध्यक्ष, लदाख बौद्ध संघ, लेह (लदाख बौद्ध संघ के प्रतिनिधि)	सदस्य



क्र.सं.	नाम और पता	पद
10-12	भारत सरकार द्वारा मनोनीत तीन बौद्ध विद्वान (क) प्रो. नवांग समतेन भूतपूर्व कुलपति केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, वाराणसी	सदस्य
	(ख) डॉ. रवीन्द्र पन्त निदेशक नव नलन्दा महाविहार	सदस्य
	(ग) भिक्षु विमलतिस गाँव चोंगखम, पी.ओ. चोंगखम जिला लोहित, अरुणाचल प्रदेश	सदस्य
13.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत कर्मचारी प्रतिनिधि	सदस्य
14.	प्रो. कोनछोग वंगदु प्रभारी निदेशक केन्द्र बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य सचिव

शिक्षा समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	प्रो. येशे थबखस केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ	अध्यक्ष
2-5	लदाख में स्थित चार महायान सम्प्रदायों के प्रतिनिधि (1) प्रो. जमयङ ग्यलछुन (2) डॉ. उर्जन डादुल (3) खनछेन छेवंग रिगजीन (4) प्रो. कोनछोक वंगदु	सदस्य
6.	प्रो. सत्यपाल अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	सदस्य
7.	प्रो. आर.के. द्विवेदी अध्यक्ष, बौद्ध दर्शन विभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	सदस्य
8.	प्रो. बी.एन. लाभ अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग जम्मु विश्वविद्यालय	सदस्य
9.	प्रो. सोनम ग्याछो केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ	सदस्य
10.	डॉ. टशी पलजोर मैत्री निवास, भजोगी मनाली, जिला कुल्लू (हि.प्र.)	सदस्य
11.	डॉ. (प्रो.) कोनछोग वंगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य-सचिव

वित्त समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण निदेशक (वित्त) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली	अध्यक्ष
2.	श्री स्वराज कुमार आर्य उपायुक्त, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली	सदस्य
3.	प्रो. कोनछोग वंगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
4.	श्री छेरिंग मुटुप प्रशासनिक अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य-सचिव

प्रकाशन समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	प्रो. कोनछोग वंगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	अध्यक्ष
2.	डॉ. पद्माकर मिश्रा प्रकाशन प्रभारी सं. सं. विश्वविद्यालय, वाराणसी	सदस्य
3.	मुख्य सम्पादक अनुवाद विभाग केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय सारनाथ, वाराणसी	सदस्य
4.	खनपो कोनछोग फनदे लेह-लद्दाख	सदस्य
5.	डॉ. लोबजंग छेवांग प्रो. तुलनात्मक दर्शन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
6.	श्री छेरिंग मुटुप प्रशासनिक अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य-सचिव

ग्रन्थालय समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	प्रो. कोनछोग वंगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	अध्यक्ष
2.	पुस्तकालयाध्यक्ष जिला पुस्तकालय, लेह	सदस्य
3.	डॉ. टशी समफेल निदेशक स्रोडचन पुस्तकालय पी.ओ. कुलान, सहस्रधारा रोड, देहरादून	सदस्य
4.	भिक्षु लगदोर निदेशक तिब्बती पुस्तकालय एवं अभिलेख, धर्मशाला (हि.प्र.)	
5.	श्रीमती छेवांग डोलमा पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य-सचिव

शोध समिति की संरचना

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	प्रो. आर.के. द्विवेदी अध्यक्ष बौद्ध दर्शन विभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	अध्यक्ष
2.	प्रो. प्रद्युम्न दुबे पालि एवं बौद्ध अध्ययन बी. एच. यू. वाराणसी	सदस्य
3.	डॉ. हीरापाल गंग नेगी अॅसोशिअट् प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	सदस्य
4.	प्रो. जमयंग ग्यलछुन प्रो. भोट साहित्य के. बौ. वि. संस्थान, लेह	सदस्य
5.	डॉ. एल.एन. शास्त्री मुख्य सम्पादक केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय सारनाथ, वाराणसी (उ.प्र.)	सदस्य
6.	प्रो. कोनछोग वंगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य-सचि

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि-वार संख्या

क. शैक्षणिक पद

क्र.सं. पद का नाम	वेतनमान (₹)	स्वीकृत पद	भरे गये	रिक्त पद
1. निदेशक	37400-67000+10000	01	01	-
2. प्रोफेसर/आचार्य	37400-67000+8900	04	03	01
3. उपाचार्य	15600-39100+7600	10	07	03
4. प्राध्यापक	15600-39100+5400	23	23	-
5. प्रशिक्षक, शिल्पकला	15600-39100+5400	01	01	-
6. प्रशिक्षित स्नातक	9300-34800+4600	12	09	03
7. प्रशिक्षक, काष्ठकला	5200-20200+2800	01	01	-
8. अध्यापक, गो.वि.	5200-20200+2800	100	90	10

ख. प्रशासनिक पद

1. प्रशासनिक अधिकारी	15600-39100+6600	1	1	-
2. अति. प्र. अधिकारी	15600-39100+6600	1	-	1
3. अधीक्षक	9300-34800+4200	1	-	1
4. लेखाकार	9300-34800+4200	1	1	-
5. मेडिकल सुपरवाइज़र	9300-34800+4200	1	1	-
6. निजी सहायक	9300-34800+4200	1	1	-
7. मुख्य सहायक	9300-34800+4200	1	1	-
8. आशुलिपिक	5200-20200+2800	1	1	-
9. कार्यालय सहायक	5200-20200+2400	4	4	-
10. रोकड़िया	5200-20200+2400	1	1	-
11. भण्डारक	5200-20200+2400	1	1	-
12. एल.डी.सी	5200-20200+1900	1	1	-



क्र.सं. पद का नाम	वेतनमान (₹)	स्वीकृत पद	भरे गये	रिक्त पद
13. पम्प चालक	5200-20200+2400	1	1	-
14. गाड़ी चालक	5200-20200+2400	2	2	-
15. गार्ड कमांडर	5200-20200+2400	1	1	-
16. वरिष्ठ चौकीदार	5200-20200+1900	1	1	-
17. चौकीदार	4440-7440+1300	4	4	-
18. जमादार	4440-7440+1400	1	1	-
19. चपरासी	4440-7440+1300	6	5	1
20. छात्रावास रसोईया	4440-7440+1300	4	3	1
21. छात्रावास बैरा	4440-7440+1300	1	1	-
22. कैन्टीन बैरा	4440-7440+1300	1	1	-
23. माली	4440-7440+1300	1	1	-
24. सफाई कर्मचारी	4440-7440+1300	3	3	-

ग. पुस्तकालय कर्मचारी

25. पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी	15600-39100+5400	1	1	-
26. सहायक सम्पादक/सह सूचीकार	9300-34800+4200	1	-	1
27. पुस्तकालय सूचना सहायक	9300-34800+4200	1	1	-
28. पुस्तकालय-परिचारक	4440-7440+1300	1	1	-

घ. शोध एकांश

29. शोधधिकारी	15600-39100+5400	1	1	-
30. अनुवादक	9300-34800+4600	1	1	-

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के 2014-2015 सत्र के अन्तर्गत
प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण

कक्षा	छात्र संख्या	परीक्षा में प्रवेश	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
क. विश्वविद्यालय कक्षाएँ				
1. पूर्वमध्यमा प्रथम	84	82	47	57.31
2. पूर्वमध्यमा द्वितीय	71	64	39	60.93
3. उत्तरमध्यमा प्रथम	81	80	74	92.50
4. उत्तरमध्यमा द्वितीय	59	56	47	83.92
5. शास्त्री प्रथम	63	58	47	81.3
6. शास्त्री द्वितीय	12	12	07	58.33
7. शास्त्री तृतीय	31	29	27	93.10
8. आचार्य प्रथम	21	20	20	100.00
9. आचार्य द्वितीय	06	06	06	100.00
कुल	428	407	314	77.14
ख. पारम्परिक हिमालयन कला				
1. काष्ठकला	11	9	4	44.44
2. मूर्तिकला	17	17	16	94.11
3. अमची	34	31	29	93.54
4. चित्रकला	31	22	15	68.18
5. ज्योतिष	2	2	01	50.00
कुल	95	81	65	80.24
ग. कनिष्ठ कक्षाएँ				
1. छठी	59	54	50	92.59
2. सातवीं	93	82	78	95.12
3. आठवीं	84	78	78	100.00
कुल	236	214	206	96.26
पूर्णयोग (क+ख+ग)	759	702	585	83.33

**गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवत् एवं कक्षावत्
नामांकन का विवरण**

क्र.सं. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावत् कुल नामांकन					कुल शैक्षणिक पद	
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम		योग
1. हेमीस गोनपा विद्यालय, हेमीस, लेह	04	06	17	14	17	58	4
2. शचुकुल गोनपा विद्यालय, शचुकुल, चंगथंग, लेह	09	04	05	10	05	33	3
3. चेमडे गोनपा विद्यालय, चेमडे, लेह	01	05	10	04	-	20	2
4. अनले गोनपा विद्यालय, अनले, लेह	02	-	06	05	06	19	2
5. कर्मा डूपग्युद छोसलिंग गोनपा विद्यालय, चोगलमसर	05	01	03	06	4	19	2
6. लीकीर गोनपा विद्यालय, लीकीर, लेह	01	02	06	07	03	19	2
7. ठीकसे गोनपा विद्यालय, ठीकसे, लेह	02	03	05	03	-	13	2
8. सामस्तानलींग गोनपा विद्यालय, सामस्तानलींग, नूबरा, लेह	03	02	02	04	06	17	2
9. स्पीतुग गोनपा विद्यालय, स्पीतुग, लेह	07	03	09	01	03	23	3
10. फ्यांग गोनपा विद्यालय, फ्यांग, लेह	-	-	02	07	07	16	1
11. ग्युदजिन तान्त्रिक गोनपा विद्यालय, फे	07	08	-	-	-	15	1
12. मटो गोनपा विद्यालय, मटो, लेह	01	03	02	01	02	09	1
13. हनुथंग गोनपा विद्यालय	02	02	01	-	-	05	2
14. स्तगना गोनपा विद्यालय, स्तगना, लेह	01	-	02	03	01	07	1
15. स्वयुरबनचन गोनपा विद्यालय, खलचे	-	03	03	-	-	06	1
16. मूद गोनपा स्कुल, मूद, चंगथंग, लेह	-	03	-	01	01	05	1
17. न्योमा गोनपा विद्यालय, चंगथंग	04	-	02	04	04	14	2
18. छुशुल गोनपा विद्यालय, चंगथंग	03	03	-	03	05	14	2
19. रिजोंग गोनपा विद्यालय, रिजोंग, लेह	08	04	06	04	01	23	2
20. देस्कीद गोनपा विद्यालय, देस्कीद, नूबरा, लेह	01	-	07	03	03	14	1



क्र.सं. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावत् कुल नामांकन						कुल शैक्षणिक पद
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	योग	
21. यरमा गोनबो गोनपा विद्यालय, नुबरा	02	03	03	-	-	08	1
22. बरदन गोनपा विद्यालय, बरदन, जंस्कार, कारगील	02	06	-	01	01	10	1
23. कोरजोग गोनपा विद्यालय, चंगथंग	04	03	04	04	-	15	2
24. कारशा गोनपा विद्यालय, कारशा, जंस्कार, कारगील	04	11	02	02	-	19	2
25. लामायुरू गोनपा विद्यालय, लामायुरू, लेह	-	03	06	04	05	18	2
26. फूगथल गोनपा विद्यालय, फूगथल, जंस्कार, कारगील	05	16	14	-	07	42	3
27. रंगदुम गोनपा विद्यालय, जंस्कार	08	07	05	01	03	24	2
28. मुने गोनपा विद्यालय, जंस्कार	01	03	03	01	03	11	1
29. जोंगखुल गोनपा विद्यालय, जंस्कार	04	-	01	05	03	13	1
30. स्तोंगदे गोनपा विद्यालय, जंस्कार	-	03	-	01	01	05	1
31. स्तगरिमो गोनपा विद्यालय, जंस्कार	07	05	-	-	-	12	1
32. पलदार गोनपा विद्यालय, पलदार	05	06	06	17	17	51	4
33. की गोनपा विद्यालय, कजा, स्पीती	-	-	08	05	06	19	2
34. तनग्युद गोनपा विद्यालय, कजा, स्पीती	-	12	12	12	-	36	3
35. उरग्यन दोरजे छोसजोड, सबु	18	5	-	-	-	23	1

श्रामणेरी विद्यालय

36. तिमोसंग श्रामणेरी विद्यालय	-	-	-	03	08	11	1
37. स्किदमंग श्रामणेरी विद्यालय, स्किदमंग	01	02	05	03	03	14	2
38. चुलीचन श्रामणेरी विद्यालय, चुलीचान, लेह	11	02	02	05	01	21	2
39. बौद्धखरबु श्रामणेरी विद्यालय, बौद्धखरबु, करगील	01	01	03	01	-	06	1
40. वाखा श्रामणेरी विद्यालय, वाखा, कारगील	-	01	02	03	02	08	1
41. शारगोल श्रामणेरी विद्यालय, शारगोल, कारगील	07	01	02	03	-	13	2



क्र.सं. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावत् कुल नामांकन					कुल शैक्षणिक पद	
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम		
42. जंगला श्रामणेरी विद्यालय, जंगला, जंस्कार, कारगील	01	01	02	02	03	09	1
43. करशा श्रामणेरी विद्यालय, जंस्कार, कारगील	08	04	01	-	03	16	1
44. टशी छोसलिंग श्रामणेरी विद्यालय, हि.प्र.	08	06	06	04	2	26	2
45. सक्या श्रामणेरी विद्यालय, चोगलमसर	04	-	06	08	16	34	3
46. यड्चेन् छोसलिङ् श्रामणेरी विद्यालय, स्पीती हि.प्र.	10	-	15	13	-	38	3
47. तुडरि श्रामणेरी विद्यालय, जड्कर	02	06	06	01	08	23	2
48. दोर्गे ज़ोङ् श्रामणेरी विद्यालय,	19	-	-	-	-	19	2
49. फगमो लिङ् श्रामणेरी विद्यालय,	28	-	-	-	-	28	1
50. देछेन छोलिङ् श्रामणेरी विद्यालय,	25	-	-	-	-	25	2
कुल योग	246	159	202	179	160	946	90

वर्ष 2014-2015 के परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार)

कक्षा	छात्र संख्या	उपस्थित	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
प्रथम	74	67	57	85
द्वितीय	28	27	20	74
तृतीय	24	23	19	83
चतुर्थ	28	27	24	89
पांचवीं	31	31	28	90
छठी	25	25	22	88
सातवीं	28	28	22	79
आठवीं	25	25	25	100
नौवीं	28	28	17	60.71
दसवीं	13	13	08	61.53
कुल	304	294	242	82.31

डी.पी.एस., जंस्कार की कर्मचारी संख्या

	कर्मचारी वेतनमान (₹)	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
शैक्षिक कर्मचारी				
1. प्रधानाध्यापक	9300-34800+4800	1	1	-
2. टी.जी.टी	9300-34800+4200	7	7	-
3. अध्यापक	5200-20100+2800	5	5	-
4. शारीरिक शिक्षा अध्यापक (अनुबन्ध पर)	17140 (स्थिर)	-	1	-
गैर शैक्षिक कर्मचारी				
1. कार्यालय सहायक (अनुबन्ध पर)	9910 (स्थिर)	-	1	-
2. रसोइया	4440-7440+1300	1	1	-
3. चपरासी	4440-7440+1300	1	1	-
4. गाड़ी चालक अनुबन्ध पर	8510 (स्थिर)	-	1	-
5. माली	4440-7440+1300	1	1	-
6. चौकीदार	4440-7440+1300	1	1	-

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग के वर्ष 2014-2015 की परीक्षा का परिणाम

कक्षा	छात्र संख्या	उपस्थित	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
छठी	6	6	6	100
सातवीं	6	6	6	100
आठवीं	12	12	12	100
नवीं	06	06	06	100
दसवीं	07	07	06	85.71
कुल	37	37	36	97

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग की कर्मचारी संख्या

	वेतनमान (₹)	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
शैक्षिक कर्मचारी				
1. प्रधानाध्यापक	9300-34800+4800	1	-	1
2. टी.जी.टी	9300-34800+4200	8	7	1
3. शारीरिक शिक्षा अध्यापक	9300-34800+4600	1	1	-
गैर शैक्षिक कर्मचारी				
4. कार्यालय सहायक	5200-20200-2400	1	1	-
5. चपरासी	4440-7440+1300	3	3	-





Sowa Rigpa students on their education tour of Minerals and herbs identification



Final year students of sculpture section appearing for their final practical exam



Preparation of Sand Mandala by monk students of institute



Religious dance (Cham) performance by the students of institute



Central Institute of Buddhist Studies



ANNUAL REPORT 2014-2015

Choglamsar, Leh-194101, Ladakh (J&K)



C O N T E N T S

<i>S.No.</i>	<i>Contents</i>	<i>Page No.</i>
1.	Brief History	49
2.	Objectives	50
3.	Management	50
4.	Constitution of Sub-Committees	51
5.	Funds	51
6.	Staff Strength	52
7.	Faculties and Departments	52
8.	New Admission	54
9.	Seminar/Symposium	54
10.	Educational Tour	55
11.	Publication	56
12.	Research	56
13.	Campus	56
14.	Library	57
15.	Museum	57
16.	Special Lecture/Other Academic Activities	57
	i) K.G. Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series	
	ii) Lecture by Foreign Buddhist Scholar	
	iii) Lecture by Ven.Kathok Gyatse Rinpoche	
	iv) Medical Facilities	
	v) Annual Sports Meet	
	vi) Annual/Monthly Magazines	
	vii) Science Interpretation Camp	
	viii) Workshop on Climate Change	
17.	Syllabi	59
18.	Stipend to Students	60
19.	Free distribution of Text/Note books to students	60
20.	Examination Result	60
21.	Gonpa/Nunnery School	60
22.	Annual Function	61
23.	Other Important Events	61
	i) Celebration of Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar.	
	ii) Celebration of Birth Anniversary of Dr. Radhakrishan as Teachers' Day.	
	iii) Celebration of Hindi Divas	
	iv) Consecration of Model for teaching Four Noble Truths	



	v) Buddhist Chanting of Ladakh: An Intangible Cultural Heritage	
	vi) Swach Bharat Abhiyan.	
24.	Visit of VIP's.	63
	i) Mrs. Arvind Manjeet Singh, Joint Secretary to Govt. of India	
	ii) Shri Naveen Mahajan, Chief Observer.	
	iii) Visit of Peer Team from NAAC.	
	iv) Meeting of U.G.C. Expert Committee	
25.	Project for Translation of Buddhist Philosophical Text	64
26.	Project for the Compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture	64
27.	Teaching arrangement for foreign scholars	64
28.	Recitation of Kangyur	65
29.	Buddhist Festival at Varanasi	65
30.	Manuscripts Resource Centre	65
31.	Placement of Students after obtaining their degree/deploma	66
32.	Duzin Photang School	67
	(i) Brief History	
	(ii) Examination Result	
	(iii) Other Activities	
	(iv) Staff Strength	
33.	Buddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong (H.P.)	68
	(i) Brief History	
	(ii) Examination Result	
	(iii) Staff Strength	
34.	Annexures	
	i) Composition of Board of Management	70
	ii) Composition of Academic Committee	71
	iii) Composition of Finance Committee	72
	iv) Composition of Publication Committee	73
	v) Composition of Library Committee	74
	vi) Composition of Research Committee	75
	vii) Staff Strength of CIBS	76
	viii) Examination Result of CIBS	78
	ix) School-wise and class-wise enrollment of Gonpa/Nunnery Schools	79
	x) Examination Result of DPS, Zanskar	81
	xi) Staff strength of DPS, Zanskar	82
	xii) Examination Result of BDSV, Keylong	83
	xiii) The Staff Strength of BDSV, Keylong	83





1. BRIEF HISTORY

Prior to 1959, scholars, novices and monks of Ladakh used to go to Tibet in pursuit of higher monastic Buddhist education and used to study and do research for years in the famous Mahaviharas of Drepung, Sera, Gadan, Tashi Lhunpo, Sakya, Sangag Chosling, Derge, Dregung etc. This practice abruptly came to an end because of historical reasons. Hence, it was held imperative that a Buddhist Institute should be established for formal Buddhist education in this country. Leh was chosen the centre for the dissemination of the Buddhist Culture and Philosophy in view of its geophysical suitability and traditional matrix.

Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies was established at Leh with the holy rituals performed by Rev. Ling Rinpoche, the Senior Tutor to H.H. Dalai Lama XIV. The Institute was initially called the "School of Buddhist Philosophy". In 1962, at the behest of Ven. Kushok Bakula, Pandit Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of India, was convinced of the necessity of such an Institution for the Buddhists living in the Himalayas. Thus the Institution was given full accreditation in the matter of financial support under the administrative charge of the Ministry of Culture, Govt. of India.

In its initial stages, the Institute admitted ten scholars: one each from ten important Gonpas (Monasteries) of Ladakh. The appointment of two teachers was made to instruct the students in Tibetan Literature and Buddhist Philosophy. For 3 years these 10 Gonpas bore the entire expenses of the students and the teachers. From 1959 to 1961 the School was conducted at Leh. From there it was shifted to Spituk Village about 8 Kms away from Leh in 1962. The Institute had its new set up in 1973 at Choglamsar, 8 Kms South-East of Leh and was registered in the year 1964 under the J&K Registration Act of 1941 as an Educational Institution. Sanskrit, Hindi, English and Pali languages were introduced, besides the teaching of Buddhist Philosophy and Tibetan Literature. In 1973 the Institute was affiliated to Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P. and the courses suitable to the students of the frontier region were introduced.

The first Principal of the Institute was a renowned Tibetan Buddhist Scholar Ven. Yeshe Thupstan who worked from 1959 to 1967. Ven. Lochos Rinpoche was appointed as the second Principal of the Institute. Dr. Tashi Paljor worked as the Principal of the Institute from 1979 to 2005. Consequent upon the retirement of Dr. Nawang Tsering from the post of Principal after rendering 5 years of his service from 2005 to 2010, Dr. Wangchuk Dorjee Negi took over the charge of Principal on 15th June 2010. Subsequently, the Board of Management in its meeting held on 19 December 2011 decided to rechristen the post of principal as Director, Dr. Wangchok Dorjee Negi relinquished the post of Director on 12 December 2014 by handing over the charge to Prof. Konchok Wangdu.



2. OBJECTIVES

The main purpose of the Institute is to sharpen the multi-faceted personality of the students through inculcation of the wisdom of Buddhist Philosophy, literature and arts as well as to familiarize the students with the modern subjects. This has been a unique Institution in the country because of its provision to teach all the aspects of Himalayan Buddhist Culture at one place. For the achievement of the above mission, the Institute aims at:

- a. A deep study of Buddhist Philosophy along with History, Culture and Arts.
- b. The study of canonical and modern languages like Sanskrit, Bhoti, Pali, Hindi and English.
- c. The study of modern subjects such as History, Political Science, Arithmetic, Economics, Comparative Philosophy, General Science, and Social Studies.
- d. The translation of Buddhist scriptures into Sanskrit, Hindi, English, and other Indian languages.
- e. The collection, conservation and publication of rare manuscripts.
- f. The carrying out of research work on Buddhist Philosophy, History, Art, and Himalayan Culture.
- g. The collection and conservation of objects-de-art of archaeological significance.
- h. Study of Sowa Rigpa (Bhot Medical Science), Sculpture, Thanka Painting, religious wood-block carving and architecture.

3. MANAGEMENT

The Management of the Institute is vested with a Board of Management under the chairpersonship of Joint Secretary to the Govt. of India, Ministry of Culture. The members of the Board are the representatives of different Ministries, Departments, Associations, Universities and Buddhist Scholars nominated by the Govt. of India, Ministry of Culture. The tenure of the members of the Board of Management is for a period of three years with effect from the first meeting of the re-constitution of the Board. The Director of the Institute is the Member-Secretary of the Board. The existing composition of the Board of Management is placed as Annexure at page 70. The meeting of the Board of Management is convened after every six months. The Board of Management have the power to exercise or perform all duties, powers, functions and rights what so ever necessary or consequential and incidental to give effect to its objectives set forth in the Memorandum of Association provided the Govt. of India may from time to time issue directive on breed matter of policy which the Board shall carry out.



4. CONSTITUTION OF SUB-COMMITTEES

Several sub-committees have been constituted under the Board of Management to implement its directives and to assist the Board in matter of Academic Affairs, Finances, Research, Publication etc. A brief write-up on each sub-committee is as under:

- i) **Academic Committee:** The Board of Management constitutes an Academic Committee consisting of eminent scholars and academicians to advise the Board in the Academic Affairs of the Institute. The Committee meets once or twice in a year as per need to advise the Board in the respective field. The existing composition of the Academic Committee is placed as Annexure at page 71
- ii) **Finance Committee:** A Finance Committee under the chairpersonship of Director (Finance)/Deputy Secretary (Finance) of the Govt. of India, Ministry of Culture is constituted as per Memorandum of Association and Rules and Regulations of the Institute. The Committee meets once or twice a year to advise the Director and the Board of Management in matters relating to the administration of property and funds of the Institute. The existing composition of the Finance Committee is placed as Annexure at page 72.
- (iii) **Publication Committee:** The Institute is carrying out the publication of rare books and manuscripts relevant to Himalayan arts, culture and language. The rare books/manuscripts proposed to be published are placed before the Publication Committee for review and justification for its publication before sending to the press. The Publication Committee consists of eminent scholars and experts in the field of publication. The existing composition of the publication committee is placed as Annexure at page 73.
- (iv) **Library Committee:** The Library Committee consists of experts in the field of Library and recommend for upgradation and improvement of the Library from time to time including the requirement of additional staff, machines and equipment, digitization, cataloguing etc. The existing composition of the Library Committee is placed as Annexure on page 74.
- (v) **Research Committee:** The Research Committee of the Institute conducts interview for selection of candidates for fellowships, reviews the synopsis and progress of the Research Fellows etc. The existing composition of the Research Committee is placed as Annexure on page 75.

5. FUNDS

The Institute is fully financed by the Ministry of Culture, Govt. of India and has been allocated a provision of Rs. 950.00 lakhs and Rs. 759.00 lakhs under Plan and Non-Plan budgets respectively for the year 2014-15 to execute various projects approved by the Board of Management, CIBS, Leh. Besides an amount of Rs. 50.00 lakh was allocated under Tribunal Sub-plan for the year, 2014-15.



6. STAFF STRENGTH

The Director being the Chief Administrative Officer supervises the Institute assisted by the Administrative Officer and other supporting staff members of the Institute. The staff strength, category-wise of CIBS, Leh, showing teaching and non-teaching staff separately, is placed as Annexure at page 76.

7. FACULTIES AND DEPARTMENTS

The faculties and departments of the Institute have been established on the basis of Panch Mahavidyas of Monastic tradition for smooth and effective functioning of the Institute on University pattern as indicated below:

- i) Faculty of Adhyatma and Nyaya Vidya (Faculty of Philosophy and Logic)
- ii) Faculty of Sabdha Vidya (Faculty of Literature and Language)
- iii) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)
- iv) Faculty of Audhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

These faculties are further divided into different departments relevant to their studies as per details given below:

I) Faculty of Adhyatma and Nyayavidya (Faculty of Philosophy and Logic)

These faculties consist of six Departments for Mool Shastra and Sampradaya Shastra with different branches of the disciplines. As per Monastic system, Adhyatma and Nyayavidya are two independent vidyas and having different faculties. But we have combined these together to suit the syllabus of the Institute. The departments as discussed are given below:

- i) Department of Bhot Baudh Darshan
- ii) Department of Sanskrit Baudh Darsahan
- iii) Department of Nyingma Sampradaya
- iv) Department of Kargyudpa Sampradaya
- v) Department of Sakya Sampradaya
- vi) Department of Geylukpa Sampradaya

II) Faculty of Shabdavidya (Faculty of Literature and Languages)

This faculty consists of the languages as per details given below:

- i) Department of Bhot Literature
- ii) Department of Sanskrit



- iii) Department of Pali
- iv) Department of English
- v) Department of Hindi

III) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)

The Institute is taking much interest in preservation and promotion of traditional Himalayan arts and culture. Accordingly, the following departments have been set up for preservation and promotion of the arts and culture of the region:

- i) *Department of Sowa Rigpa and Astrology:* It is centuries old tradition in Ladakh to provide herbal medicines to the patients. When there were no allopathic medicines, the Sowa Rigpa System of Medicines used to be very popular in the region. The people still believe that the Sowa Rigpa System of Medicines is the most useful one and has no side effect. Now the Govt. of India has also recognized Sowa Rigpa as one of the traditional and useful medicine system. So the people opt for Sowa Rigpa System of Medicines. Keeping the facts in view, the Institute imparts training to students interested in Baudh Medical Science. The +2 (Higher Secondary) passed students having the sound knowledge of Bhot language are eligible for admission into six years' Baudh Medical Science Course. There are numbers of students who have been awarded the degree and some of them are practicing in the market, while most of them are in Govt./private jobs.
- ii) *Department of Traditional Scroll/Fresco Painting:* This art of painting is very popular in the region. Monasteries of Ladakh are very popular for preserving numerous Thanka paintings and frescoes. The Frescoes of Alchi Monastery and Lamayuru Monastery are very famous. One can still see the paintings that are one thousand years old. Besides, in each village there is a monastery having Thankas, frescoes and statues. The tourists from all over the world are coming to Ladakh in summer season to visit these monasteries. The Institute runs a Buddhist Scroll Painting Course for the students. A number of students are receiving training in this course to keep alive the centuries old tradition of making the Thankas.
- iii) *Department of Traditional Sculpture:* The making of clay statues and monastic masks are very common in Ladakh region. There are monastic festivals known as Gustor/Dosmoche/Tsetchu/Nagrang in every monastery on a special occasion. On this occasion, the mask dance popularly known as Cham is performed by wearing masks of different Buddhas and Bhodisattvas, gods, deities etc. The Institute has arranged to train the students for making the art of sculpture of Buddhas, Bhodhisattvas, gods, deities etc., and also teaches the art of making masks. The interested students have to undergo the training for six years after passing Class X. Numbers of students are under training in this art of making statues and masks.



iv) *Department of Traditional Wood Block Carving:* In olden times, when there were no printing machines to print books, here in Ladakh, the people used to get the copy of religious and other texts copied from wooden blocks. The scripts of texts, especially religious texts, are carved on hard wooden blocks in a systematic way, so that the scripts get printed on a paper for reading. Once a text is carved on the wooden blocks, one can copy the text for thousand times like photostate copies. This was very popular in Ladakh in olden times. There is a system to hoist prayer flag in the monastery as well as on the top of every Buddhist household known as Tarchok and Tarchan on the main gate. These prayer flags are printed texts on clothes of five different colours, which symbolize for high spiritual power. The text contained Lungsta and Gyal-Tsan Tsemo. The text prints out on clothes from wooden block made for the purpose. To continue this art, the Institute has introduced a six year course of Wood Carving. Besides the block making, one can learn the art of carving other decorative items like the carving of dragons, birds, lions, horses etc. This art is very popular in Ladakh region and one can earn handsome money for one's livelihood through this.

IV) Faculty of Adhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

There are five departments under this faculty which are as under:

- i) Department of Baudh Puranic History.
- ii) Department of Comparative Philosophy
- iii) Department of History
- iv) Department of Economics
- v) Department of Political Science

8. NEW ADMISSION

Admission is being provided from Class VI to IX on the basis of an entrance test conducted by the Admission Committee as per the norms prescribed. However, the students of the feeder Gonpa/Nunnery Schools of the Institute are admitted directly.

Admission is also given to the students to the six years' course in Sowa Rigpa, Baudh Scroll Painting, Sculpture, and Wood Carving depending on the availability of seats. During the year under report 110 students were admitted into various classes including professional courses.

9. SEMINAR/SYMPOSIUM

- a) During the year under Report, the Institute organized three days' All India Seminar on the subject "Rich Cultural Heritage of Zanskar" w.e.f. 26-08-2014



to 28-08-2014 at Duzin Photang School, Zanskar by inviting scholars from different Universities, Institutions and Monasteries. The National Seminar was organized at DPS, Zanskar on the eve of the 25th Anniversary of the School as a part of the silver jubilee celebration. The seminar was inaugurated by Raja Nima Nurboo of Zanskar. A large number of scholars from different Universities, Institutions and Monasteries from all over India participated in the seminar and presented their valuable papers. Besides, a large number of scholars from Ladakh region also participated in the seminar. The papers presented in the seminar have been collected and published in the form of book titled "Ladakh Prabha". The valedictory function of the seminar was presided over by Shri Phunchok Dawa, the Raja of Padum, Zanskar. A colourful cultural programme by the senior students of the CIBS, and the Duzin Photang School, Ufti, Zanskar were performed on the occasion. The prizes for best troops were also given away on the occasion.

- b) **Work-Shop:** One day workshop on the subject "Practices of Kalachakra Initiation in day-to-day Life" was organized in the Institute on 7th December 2014. Six Scholars presented their valuable papers followed by open discussion. A large number of monks, nuns and devotees participated in the workshop apart from staff and students. The workshop was a great success and it was demanded by the participants for arrangement of such workshop in future also. This work shop was organized to know the changes in common people after the 33rd Kalachakra Initiation delivered in Leh from 3rd to 15th July 2014 by H.H. Dalai Lama XIV.

10. EDUCATIONAL TOUR

A group of 50 students from classes of Acharya II, Shastri-III, U.M.-II, and final years of Sculpture, Painting and Wood Carving were on *Bharat Dharshan* (Educational Tour) in the month of January 2015 for a period of 36 days. The group visited Jammu, Delhi, Kolkata, Bhuneswar, Puri, Mysore, Chennai, Pondichery, Goa, etc. The Educational Tour was conducted under the supervision of Dr.Sonam Angchok, Lecturer and Mrs Shashi Rawat of the Institute and the purpose of the tour was to familiarize the students with the great historical, industrial, religious, and geographical wealth of the country and to imbibe in them the feelings of National Integration.

The students of the lower classes of the Institute were also taken for a local educational tour, i.e., *Ladakh Darshan* to Changthang valley for a period of 5 days under the supervision of three teachers. The total number of students who took part in this tour was 62 from class P.M.II. They visited the historical places, monasteries; lakes etc., of the area. Thus the institute provided an amount of Rs. 5.50 lakhs to conduct these tours.



Besides, a batch of thirty seven students from the Department of Sowa Rigpa under the guidance of the teachers concerned toured to Khardongla for 3 days in August 2014 for collection/identification of various medicinal herbs and minerals used for preparation of Sowa Rigpa system of medicines. Various herbs were collected and demonstrated for preparation of medicines. The samples have been preserved in an album for reference. A large number of herbs were identified during the tour and also the raw materials were collected. Varieties of Sowa Rigpa medicines have been prepared by the Sowa Rigpa Department of the Institute itself through practical classes which include powder, pills etc. During the year under report, these medicines are being provided to patients on very nominal charges.

11. PUBLICATION

The Institute published 80 numbers of rare and valuable books on various subjects including the proceedings of the National Seminar (Ladakh-Prabha). During the year 2014-15, the Institute published six books, viz. Seven Points of Mind Training, Bodhicharyavatra, Tri-Lingual Dictionary, An Introduction of Kalachakra, Betal Ki Adbut Katha, Bhumi Marga and Siddhanta Ratnasopana.

12. RESEARCH

The Institute has established four Fellowships for Research Scholars on the pattern of U.G.C. The research works are being conducted in the field of Buddhism as well as in the four sects of Mahayana Buddhism. The Sampurnanand Sanskrit University has so far awarded the degree of Ph.D. to nine scholars from this Institute. The Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 13th March, 2015 approved the proposal to increase the number of fellowship from 4 to 8 on UGC pattern keeping in view the facts that the Institute is on advanced stage for declaration of the status of Deemed to be University.

13. CAMPUS

The Institute is located 8 kilometers south of Leh town on the bank of the Indus river in Choglamsar. It has two campuses new as well as old. The old campus is located on a piece of land measuring 23 Kanals and used for running the classes for the junior wing form Class 6th to 8th with the strength of 236 students. It is under the charge of a Headmaster assisted by the Trained Graduate Teachers (TGTs) and other staff members. There are the teaching block, a small auditorium, office and children's library in this campus. Some projects of the Institute such as Manuscripts Resource Centre, Manuscripts Conservation Centre Encyclopedia of the Himalayan Culture are also going on in the old campus. The new campus is located just half a kilometer away from the old campus built up with separate blocks for teaching, Administration,



Library and hostels(with a capacity of one hundred students in each which are separately provided to the monks, boys and girls). There are 60 residential quarters for staff and a guest house with a capacity to accommodate 20 guests at a time. There is a sport stadium with facilities of spectators' gallery, dressing room, store etc. Besides, an auditorium with seating capacity of 700 people is available to carry out the various activities of the Institute. The construction of a Philosophical Debate Hall, Students' Recreation Center, and part of site development works are in progress and likely to be complete by mid 2015.

14. LIBRARY

The Library is a vital organ of the Institute in which not only the students and teachers, but also other members of the Institute depend upon for seeking information and wisdom. A large number of Indian as well as foreign tourists visit the Library during the tourist season. The Library of the Institute was shifted to the new campus for which a separate building of three stories is available. The library has been computerized by installing the Slim Thumi Software. There are three sections of the Library, i.e., (1) General Section (2) Sungbum/Tibetan Section and (3) Reference Section. The total collection of 31,192 books in Tibetan, English, Hindi, Sanskrit, Pali and Urdu on Religion, History, Philosophy, Literature, Sociology etc, are available. The Library has a well-collected reference section comprising of Encyclopedias, Dictionaries and Year Books. During the year under report the Institute purchased 574 books worth Rs. 1.82 lakhs. The Library of the Institute has subscribed to 20 Indian and foreign research journals/periodicals during the year. Besides, 15 numbers of various types of magazines in different languages were also subscribed. In the interest of the students and readers, the Institute subscribes to 08 different types of newspapers for the Library.

15. MUSEUM

The Institute has built up a small archaeological Museum with a collection of antiquities and objects-de-art which among other things include sculpture and painting articles of Ladakh, antique photographs and replicas brought from many historical places of India. This is a unique Museum of its kind in Ladakh, which draws attention of tourists as well as the research scholars on a large scale every year.

16. SPECIAL LECTURES/OTHER ACADEMIC ACTIVITIES

- i) ***Gyalsras Kushok Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series:*** Ven. Kushok Bakula Rinpoche was a great scholar and a social reformer of Ladakh. He did yeomen service for the development of Ladakh. He spent his life for the welfare and uplift of the poor and the downtrodden people of the region. He had a good political position in the State Govt. of Jammu and Kashmir as Cabinet



Minister, and was M.P. in the Indian Parliament, Ambassador to Mongolia etc. In recognition of his social work, the Govt. of India awarded him with the Padma Bhushan. Due to his endeavour, the *Central Institute of Buddhist Studies* formerly known as *School of Buddhist Philosophy*, Leh was established in the year 1959 to develop and preserve the rich cultural heritage of the region. In his memory, the Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 27-2-2004 decided to commence a lecture series. During the year under report, the Lecture Series was conducted on 9th June 2014 by inviting Galdan Tri-Rinpoche, a reknowned Buddhist Scholar. He delivered his lecture on a specific topic, i.e., "Introduction to Kalachakra Initiation". The 2nd Lecture was delivered on 4th August, 2014 on the subject "Bodhichit" by Dr. Tashi Paljor the former Principal of Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The lecture was attended by a large number of faculty members, senior students and other people interested.

- ii) **Lecture by foreign Buddhist Scholars:** To create academic interest among the students of the Institute and to know the view of foreign scholars on Mahayana Buddhism, the Institute organized a special lecture by inviting Dr. Bessy Kerzin, an American monk and Dr. Paul Kerby, a scholar from England who were in Ladakh to attend the Kalachakra 2014 by H.H. Dalai Lama XIV. Dr. Bessy Kerzin gave a talk on Kalachakra and Dr. Paul Kerby on "Health and Mind Training" on 28-06-2014. All staff and students attended the programme.
- iii) **Lecture by Ven. Kathok Gyatso Rinpoche:** Most Ven. Kathok Gyatso Rinpoche was invited on 29th July, 2014 he and delivered a special lecture to the staff and students. He asked the students for hard work to achieve their goal and advised the teachers about the noble teaching profession.
- iv) **Medical Facilities:** The Institute has a dispensary of its own and provides medicines to the students and the staff. A part time Doctor visits the Institute every alternate day. The part-time Doctor is assisted by a Staff Nurse and a Nursing Orderly. This arrangement is very useful for the students and the staff. During the year the Institute purchased medicines worth Rs. 1.92 lakhs to be distributed freely among the students and the staff for treatment of different ailments.
- v) **Annual Sports Meet:** To encourage athletic activities, the Institute arranged Annual Sports Meet for eight days from 24th September to 1st October 2014 during which various types of games and sports activities were conducted among the different houses, viz Nalanda, Takshila and Vikramshila. The faculty members and students actively participated and successfully completed the programme. The position holders were honoured with medals and certificates on the occasion of Annual Function.
- vi) **Annual/Monthly Magazine:** The Institute also brings out an Annual Magazine entitled "Rigpai Durtse" and a monthly News Letter titled Lomai Gatsal to which the students and the staff contribute articles on different



subjects. The activities of the Institute and the staff and students having received awards during the year are also highlighted with their photographs. This is purely an institutional magazine and it reflects the nature and scope of the Institute absolutely.

vii) **Science Interpretation Camp:** 14 students of the Institute actively participated in the programme “Inspire Science Interpretation Camp” organized on 11th and 12th July, 2014 by Shri Mata Vaishno Devi University, Jammu in collaboration with 14 Corps Army.

viii) **Workshop on Climate Change:** The students of Class Purva Madyama II participated in the students’ education programme on Energy and Environment, Climate Change and Global Warming jointly organized by the Institute of Research and Training, University of Jammu and Geological Survey of India for two days on 20th and 21st June 2014.

17. SYLLABI

In the formative years, the ten-year syllabi covering the subjects of Hindi, Sanskrit, Buddhist Philosophy and Tibetan Language were in operation. In the year 1973, the Institute was affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P., and accordingly, special syllabi were drawn up to fulfill the requirements of the border area students and to achieve the aims and objectives for which the Institute was initially established. The University has constituted a Board of Studies to have periodical reviews of the syllabi. The Board holds a meeting once in a year to review the syllabi and to introduce new courses. The compulsory subjects are Sanskrit, Hindi, English, Tibetan Literature, and Buddhist Philosophy and the optional subjects are Political Science, Economics, Pali, Comparative Philosophy, Tibetan Medicine, Wood Carving, Sculpture and Painting. The syllabi of the Institute have been approved by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi on the recommendation of the Board of Studies of the University. The Jammu & Kashmir Universities and the State Board of School Education, J&K have recognized the degrees of the Sampurnanand Sanskrit University since 1984 on reciprocal basis as equivalents to the degrees given below:

1. Purva Madhyama	Matriculation
2. Uttar Madhyama	Higher Secondary
3. Shastri (with English)	B.A.
4. Acharya	M.A.

The Institute included the Sampradya Shastra of Mahayana Buddhism in Shasrti and Acharya courses as one of the compulsory optional subjects, which has been welcomed by the faculty members, students and other scholars of Ladakh.



18. STIPEND TO STUDENTS

The stipend ranging from Rs. 685.00 to Rs. 845.00 per student per month is presently granted to 708 students. An amount of Rs. 51.66 lakhs was disbursed to the students on account of stipend during the year 2014-15.

Besides, an amount of Rs. 78.91 lakhs has also been disbursed to 946 students of 50 Gonpa/Nunnery Schools running in various monasteries of Ladakh region and Lahaul-Spiti valley of Himachal Pradesh and other parts of J&K on account of stipend.

19. FREE DISTRIBUTION OF TEXT/NOTE BOOKS TO STUDENTS

The students studying in the Institute and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools come from most back-ward and remote areas of the region and belong to Schedule Tribe. Accordingly, under the Tribunal Sub-Plan, the Institute arranged to provide free distribution of Text/Note books to all students. During the year under report, Text/Note books worth Rs 12.99 lakhs were purchased and freely distributed among the students of CIBS and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools located in different parts of the region.

20. EXAMINATION RESULT

The examinations from Class VI to Class VIII were conducted by the Institute and examinations from Purva Madhyama I to Acharya (M.A) II were conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi. The overall pass percentage of the examination was worked out to 83.33%. The result of each class of the academic year 2014-15 is placed as Annexure at page 78.

To improve the academic standard of the junior students necessary arrangements have been made to conduct the half yearly and the Annual Tests in June and November every year by the Institute.

21. GONPA/NUNNERY SCHOOLS

To achieve its objectives, the Institute is running 50 Gonpa/Nunnery Schools in different monasteries which are extremely popular in the region. These schools are being run in collaboration with the respective monasteries, and accordingly, they arrange classrooms, hostel facilities and also provide ritual teachings. The Institute provides one to three teachers depending on the number of enrolment in a particular school. Besides, the furniture, stationeries, text books and note books and stipend to the students are being provided by the Institute. The teachers appointed by the Institute provide the modern elementary education viz. Bhoti, Hindi, English, Mathematics, Social Studies etc., in



addition to the monastic education. During the year under report 946 students enrolled in the 50 Gonpa/Nunnery schools located in different monasteries of Ladakh. The school-wise and class-wise enrolment of the students for the year 2014-15 is placed as Annexure at page 79.

22. ANNUAL FUNCTION

The 55th Annual Day of the Central Institute of Buddhist Studies was organized on 23rd November, 2014 on the Institute's Campus with great enthusiasm. The prizes were distributed among the position holders in the Annual Examination and in favour of the students who won in various competitions viz., essay competition, poem recitation competition, painting competition, lecture competition, sports activities, cultural activities, quiz competition etc. H.E. Togdan Rinpoche, an eminent Buddhist Scholar of the Himalayan region was the Chief Guest on the occasion and the prizes were distributed by him. Shri Tsering Namgail Shunu, Hon'ble Member of the National Commission for Minorities, Govt. of India attended the function as Guest of Honour. A colorful Cultural Programme was presented by the students of the Institute on the occasion. The function was attended by many scholars, Guests of the Ladakh region in addition to the staff and students. The function was concluded with the singing of the National Anthem.

23. OTHER IMPORTANT EVENTS

The following celebrations and activities were carried out in the Institute with great enthusiasm during the year under report:

- i) **Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar:** 124th Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar was celebrated on 14th April, 2014 in the Institute. The faculty members and senior students actively participated in the function and threw light on the life and achievement of Dr. B.R. Ambedkar. Prof. Wangchok Dorjee Negi, Director presided over the function.
- ii) **Birth Anniversary Dr. Radhakrishnan:** The Institute celebrated the birth anniversary of Dr. Radhakrishnan as Teachers' Day, on 5th September, 2014. The teachers and students throw light on the life and achievement of Dr. Radhakrishnan. The teachers emphasized the need of the students to follow and implement the principles and ideas of Dr. Radhakrishnan in their life.
- iii) **Hindi Divas:** The Institute celebrated the Hindi Divas on 14th September, 2014 by conducting various types of literary competitions viz. essay writing, poem recitation, lecture delivery etc., in Hindi language. The prizes were distributed among the first, second and third position holders in the above competition. Besides, the scholars delivered lectures about the importance and use of Hindi language.



- iv) **Consecration to Model of teaching Four Noble Truths:** The Institute erected a model for teaching of Four Noble Truths on the campus with the help of Department of Sculpture and painting. The consecration ceremony to the newly erected model for teaching of Four Noble Truth was organized by H.H. Dalai Lama XIV on 16th of July, 2014. His Holiness also blessed the staff and students of the Institute after the consecration ceremony. Shri Nawang Rigzen Jora, Hon'ble Minister for Urban Development, Govt. of Jammu & Kashmir was also present on the occasion.
- v) **Buddhist Chanting of Ladakh:** The list of intangible cultural heritage was established by UNESCO aiming to ensure the better protection of important intangible cultural heritage worldwide and the awareness of their significance. The programme for the list of intangible cultural heritage has been launched with an aim to draw attention to the importance of safeguarding intangible heritage, which has been identified by UNESCO as an essential component and a repository of cultural diversity and creative expression. The Intangible Cultural Heritage (ICH) which is also called the living heritage means the practice of representations, expression, knowledge, skills of a people as well as the instruments, objects, artifacts and cultural spaces associated with those communities/groups/individuals. Thus, ICH can be manifested, inter-alia, in any of the following domains: oral tradition and expressions including language, performing arts, social practices, rituals and festival events, knowledge and practices conserving nature and universe as well as traditional craftsmanship. Accordingly, the Government of India, Ministry of Culture entrusted the job for preparation of nomination dossier for Buddhist Chanting of Ladakh for inscription on UNESCO's representative list of intangible cultural heritage (second circle). The Institute prepared the nomination dossier in the shape of audio visual documentation of 60 minutes duration and shorter version of 10 minutes duration in digital video format in English and presented before the UNESCO through Model Agency IGNCA. The UNESCO selected the Buddhist Chanting of Ladakh, recitation of sacred Buddhist texts in trans-Himalayan Ladakh to be included in the list of intangible cultural heritage of Humanities in the year 2012. The Buddhist chanting of Ladakh comprised of the chanting of the following monasteries of Ladakh.

S.No	Name of Monastery	Theme of Chanting
1.	Hemis Gonpa	Rigma Chutuk
2.	Thiksay Gonpa	Shar-Kangri-ma
3.	Spituk Gonpa	Nas-Tans
4.	Pyang Gonpa	Chod
5.	Matho Gonpa	Kun-rig



vi) **Swachh Bharat Abiyan:** The Govt. of India on the initiative of Hon'ble Prime Minister of India Shri Narandra Modi launched a Swachh Bharat Abiyan with a view to make the whole country neat and clean. Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies, Leh keeping view the initiative in mind took up the assigned job to make neat and clean of the office, class room, campus and surrounding area of the Institute by involving the staff and students on the following occasion.

i) World Environment day on 5th June, 2014

ii) Birth Anniversary of Mahatama Gandhi on 2nd October, 2014

Besides, as per framed calendar, the Institute took up the task of cleaning on monthly basis. More ever, the faculty members delivering lecture on weekly basis to the students about the important of Swachh Bharat Abiyan arranged various types of competitions viz, essay, poem recitation, lecture, painting competition etc. among the students on this theme.

24. VISIT OF VIP's

i) **Visit of Mrs. Arvind Manjeet Singh, Joint Secretary:** Mrs. Arvind Manjeet Singh, Joint Secretary to Govt. of India Ministry of Culture (Chairperson, BoM, CIBS) visited the Institute on 3rd April, 2014. A warm reception was arranged and also he witnessed the rehearsal of mask dance, sand mandala and butter structure prepared for proposed Buddha Mahotsava.

ii) **Visit of Shri Naveen Mahajan, Chief Obsever:** Shri Naveen Mahajan, Chief Observer, Ladakh Parliamentary Constituency visited the Institute on 22-04-2014 and discussed about the academic activities of the Institute.

iii) **Visit of Peer Team from NAAC:** A Peer Team headed by Prof. C.P. Singh, former Vice-Chancellor of Indra Gandhi National Tribal University, M.P. visited the Institute from 2nd September to 5th September, 2014 for assessment and accreditation of the Institute. Prof. Sidharath Singh, BHU and Prof. K.T.S. Sarao, Delhi University attended as member of the Peer Team. Dr. Sujata Shan Bagh, Assistant Advisor, NAAC coordinated the programme. Accordingly, on the recommendation of the Peer Team the National Assessment and Accreditation Council, Bangalore accredited the CIBS, Leh with Grade-A.

iv) **Meeting of U.G.C. Expert Committee:** The meeting of the Expert Committee constituted by UGC to recommend whether CIBS, Leh is an Institution devoted to unique and emerging of knowledge not being pursued by conventional/existing Institutions particularly in specific area of study and research and whether this Institution can be considered under de-novo category was held on 18th Novmber, 2014 under the chairmanship of Prof. H.P. Dikshit former Vice-Chancellor, IGNOU. The committee recommended to declare that CIBS, Leh is in the category of Central Institute of Research



of National Importance under de-novo category. Prof. Wangchok Dorjee Negi, Director and Shri Tsering Mutup, Administrative Officer presented the facts and figures on behalf of the Institute. Accordingly, the UGC Expert Committee observed that the CIBS, Leh devoting to itself unique and emerging of knowledge not being pursued by conventional/existing Institutions and recommended to place under de-novo category to consider for grant of Deemed to be University status.

25. PROJECT FOR TRANSLATION OF BUDDHIST PHILOSOPHICAL TEXT

Thousands of Buddhist Philosophical texts containing the teaching of Bhagwan Buddha and the books composed by the Indian and Tibetan Scholars are available in Bhoti languages. The Non-Bhoti knowing Scholars including researchers are unable to benefit themselves of these valuable books. Thus, the Institute has launched a small translation project to translate the Buddhist Philosophical Texts into Hindi for the benefit of the Scholars, Researchers and other interested people with the approval of the Board of Management of the Institute. The project started with effect from March, 2009 and presently, one Chief Editor assisted by a Editor and three research Assistants are working on the project on contractual basis. Under the project, five books have been translated and published. Six more books have already been translated and ready to be published. Translation on three more books are in progress and likely to be completed shortly.

26. PROJECT OF THE COMPILATION OF ENCYCLOPEDIA OF HIMALAYAN BUDDHIST CULTURE

The Board of Management of the Institute approved the project of the compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture. The project was initially approved for a period of five years and it has been proposed to compile the Encyclopedia in 10 volumes. The project is launched by engaging scholars on contractual basis. The project is in progress under the supervision of a Chief Editor assisted by two Editors and three Research Assistants. Two volumes of the Encyclopedia covering the Ladakh region have been published. The works on other volumes are in progress. The Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 19.12.2011 approved the extension of the project for a further period of five years keeping in view its significance.

27. TEACHING ARRANGEMENT FOR FOREIGN SCHOLARS

The Institute by engaging senior faculty members arranged one week teaching on Buddhist Philosophy, ritual and meditation course to the foreign students from different countries through World Learning India Private Ltd.



28 students actively participated in the Teaching Programme. The Teaching of Senior faculty members was followed by open discussion on the subject matter which was found to be very useful to the foreign students and it was demanded for arrangement of such programmes in future also.

28. RECITATION OF KANGYUR

On 6th of June, 2014 the Institute organized a programme for recitation of Kangyur text consisting of 108 volumes of Buddha's Teachings by involving the staff and students for peace, prosperity and happiness to all sentient beings. The programme of recitation of 108 volumes was completed in one day with the participation of all staff and students. It was a great success.

29. BUDDHIST FESTIVAL AT VARANASI

On the direction of Govt. of India, Ministry of Culture, the Institute participated in the Buddhist Festival organized at Sarnath, Varanasi from 25th to 29th December, 2014. The following programme was presented by the Institute on the occasion.

- i) **Chams dance:** A group of 15 monks from Hemis Gonpa performed the Chams dance wearing traditional colourful dresses; the local people as well as tourists much appreciated the performances.
- ii) **Exhibition and demonstrations of Thangka Painting:** Two artists of the Institute exhibit the Thangka Paintings and also demonstrate the art of making the Thangka to the interested people.
- iii) **Book Stall:** A book stall was installed to sell the books published by the Institute and for its publicity.

30. MANUSCRIPTS RESOURCE CENTRE

The National Mission for Manuscripts, Govt. of India has designated CIBS, Leh as the Manuscripts Resource Centre and Manuscripts Conservation Centre for the Ladakh region. Accordingly, the Institute is carrying out the assigned job by engaging scholars on contractual basis. At present, seven Resource Persons are working on the project from March to November. The documentation works are kept closed for three months from December to February due to severe cold weather. The Institute so far has documented about 28,417 manuscripts from 2041 different Monasteries/Palaces/Individuals of Ladakh region. The Institute is trying to document all available manuscripts in the region. Besides, the Institute also carries out the conservation of rare manuscripts available in different monasteries of the region. So far, we have conserved 19,012 folios.



31. PLACEMENT OF STUDENTS AFTER OBTAINING THEIR DEGREE/DIPLOMA

The Institute provides the degree of Ph.D., Acharya (equivalent to M.A.) in Bhot Baudh Darshan, Sanskrit Baudh Darshan, Baudh Puranic History, Bhot Literature and Comparative Philosophy; Shastri (equivalent to B.A.); Uttar Madyama (equivalent to +2), and Purva Madyama (equivalent to Matriculation). Besides, Six years' diplomas in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science), Scroll Painting (Thangkas), Sculpture and Wood Carving are also being provided. It is observed that none of the students having obtained the above degrees from CIBS, Leh are without job. The students having passed their respective degrees/diplomas easily get appointments especially, in the education department of Jammu & Kashmir, Kendriya Vidyalaya, Navodaya Vidyalaya and Private Schools. The candidates having the above degrees/diplomas have good opportunity for appointment in the department of Akashwani and Dordarshan as they prefer for the candidates having good knowledge of local language. The Institute feels proud that the Alumni of the CIBS, Leh have good positions in the State and Central Government Services recruited through Kashmir Administrative Service and UPSC. The first ever Ladakhi Judge Hon'ble Tashi Rabstan appointed in the Jammu & Kashmir High Court studied in CIBS, Leh upto Uttar Madyama.

Besides, the Alumni of the Institute are serving for the country in the Military and Para-Military forces all over India. Some Alumni of the Institute are working in the eminent Universities such as Vishva Bharati University, Shantinekatan, Jawahar Lal Nehru University, Delhi etc. There are numbers of officers in the police department of Jammu and Kashmir who have obtained degrees from the CIBS, Leh. The branch and feeder schools of the CIBS, Leh are run by appointing the Alumni of CIBS, Leh which help the preservation and promotion of the cultural heritage of the region.

The students having the diploma in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science) have been engaged in the State Health Department under the "Centrally Sponsored Scheme", National Rural Health Mission, to look after the rural patients throughout the region. The students having diploma in Thangka Painting, Sculpture and Wood Carving are earning handsome amount by preparing the Thangkas, Statues and Wood Carving works for the local people as well as tourists visiting Ladakh. Besides, the candidates having the above diploma are appointed as Instructors in the organizations running similar courses.

In this way, thousands of students have passed and obtained the various degree/diploma from CIBS, Leh and none of them are found unemployed which is a great achievement of CIBS, Leh.



32. DUZIN PHOTANG SCHOOL, ZANSKAR

- i) **Brief History:** In 1980, His Holiness Dalai Lama XIV paid his first visit to Zanskar on the invitation of the Buddhist Association, Zanskar and felt it necessary to open a school for the preservation of the rich culture of the area. Accordingly, he donated some funds to the Buddhist Association, Zanskar for the purpose. In September 1984 the Buddhist Association established a School at Duzin Photang for the benefit of the poor and needy students of the area. Initially, 101 students were admitted in the School and three teachers were also appointed. The hostel facilities were also provided to the students coming from far-flung areas. The Buddhist residents of Zanskar also donated funds for the improvement and upgradation of the School. H.H. the Dalai Lama during his second visit to Zanskar in 1988 further donated funds for the development of the School. The Buddhist Association, Zanskar and the people of Zanskar had represented to the then Hon'ble Prime Minister of India, Mr. Rajiv Gandhi regarding the importance of the School with a request to take over the school by the Govt. of India on the pattern of the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The Hon'ble Prime Minister of India Shri Rajiv Gandhi paid his visit in March/April 1988 to Zanskar and decided that the Govt. of India would take over the D.P.S. as a branch school of the CIBS, Leh w.e.f. 1st November 1989. Since then, the School is being run under the financial and administrative control of CIBS, Leh-Ladakh. At present 304 students are on the roll of the School from Classes I to X. A campus consisting of teaching block, a small library, a multi-purpose Hall, Hostel for 100 students, some Staff Quarters and playing ground is available. It is one of the best campuses entire in the Zanskar valley. A bus is also available to lift the day scholars of the school. Zanskar valley is isolated place even remains cut off from Leh and Kargil for about 6 to 7 months in a year during winter.
- (ii) **Examination Result:** The annual examination of the students from class 1st to 8th of Duzin Photang School, Zanskar is being conducted by the School under the supervision of the Head Master. The annual examination of class IX and X are being conducted by Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi through CIBS, Leh. An examination centre has been set up at Duzin Photang School, Zanskar keeping in view the hardship faced by the students for coming to Leh for examination purpose. The class-wise enrolment of students alongwith result of each class for the academic year 2014-15 is placed as Annexure at page 81.
- (iii) **Other activities:** The school is carrying out various co-curricular activities viz, Annual Sports-cum-Literary Competitions, Conduct of Educational Tours to visit the historical places/monasteries, celebration of birth anniversary of important national level personalities, conduct of monthly lecture competitions etc. Besides, the School has a small Library with good collection of books for the students.



- iv) **Staff strength:** The staff strength of the Duzin Photang School for the year under report is placed as Annexure at page 82.

33. BUDDHA DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA, KEYLONG, DISTRICT LAHOUL & SPITI (H.P.)

- (i) **Brief History:** The Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul-Spiti (H.P.) was established in the year, 1976 to preserve the most valuable Buddhist Arts, Culture and Language of the Himalayan region viz; Lahaul, Spiti, Kinnaur, Pangi, Kullu and Manali. Prior to 1959, Scholars, Novices and Monks of this area used to go Tibet to pursue higher Monastic Education which came to an end in 1959 due to historical reasons. Thus the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong came into existence to continue the old age practice to provide monastic education to the young novices. Initially, the Vidyalaya was run with the funds raised by public donation. Subsequently, the Govt. of India, Ministry of Culture provided some financial assistance under the scheme of Financial Assistance for Development of Buddhist/Tibetan Organisations. The people of the region tried their best for the takeover of the Vidyalaya as an Autonomous Organization of the Govt. of India on the pattern of Central Institute of Buddhist Studies, Leh and Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi. But, it could not be taken over as an Autonomous Organization of the Govt. of India, Ministry of Culture. However recently, the Govt. of India, Ministry of Culture on the recommendation of the Board of Management, CIBS, Leh decided to take over the Vidyalaya as a branch School of CIBS, Leh on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Accordingly, CIBS, Leh took over the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. as a branch School from 5 March 2010 in pursuance to Govt. of India, Ministry of Culture's Letter No. F.1-11/2004-BTI dated 05-03-2010. Since then the administration of the Vidyalaya is being looked after by CIBS, Leh with full financial support.

At present 37 students are studying in the Vidyalaya from Class VI to X. Consequent upon the take over as Branch School of CIBS, Leh, the number of students is likely to increase. The Vidyalaya is affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and the examination of the students is being conducted by the said University. There are one Headmaster, six Trained Graduate Teachers (TGTs), one Bhoti Teacher, one Buddhist Philosophy Teacher, one UDC and three Class-IV employees working in the Vidyalaya. The Vidyalaya has its own building for conducting the Classes and also has a Boarding House for students coming from far-flung areas. The Central Institute of Buddhist Studies, Leh is providing the salaries of the Staff, stipend to the students, furniture/furnishing items and other day-to-day expenditure of the Vidyalaya on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar.



- (ii) **Examination of BDSV, Keylong:** The Annual Examination of Class VI to VIII of the Vidyalaya is being conducted under the supervision of the Headmaster of the said Vidyalaya. The Annual Examination of Class IX and X is being conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi to whom the Vidyalaya is affiliated. The Class-wise enrolment of students alongwith the result of each class for the Academic Year 2014-15 is placed as Annexure at page 83.
- (iii) **Staff Strength:** The staff strength of the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. is placed as Annexure at page 83.



Annexure

COMPOSITION OF BOARD OF MANAGEMENT COMMITTEE

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1.	Ms. Arvind Manjit Singh Joint Secretary to the Govt. of India Ministry of Culture, New Delhi	Chairperson
2.	Shri Saugat Biswas Deputy Commissioner/Chief Executive Officer LAHDC, Leh	Vice Chairman
3.	Prof. R.K. Diwedi (Nominee of the Vice-Chancellor of the University to which the Institute is affiliated)	Member
4.	Mrs. Mahalakshmi Ramakrishanan Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India, New Delhi	Member
5.	One Representative of the Ministry of External Affairs	Member (Ex-Officio)
6.	Director/Deputy Secretary to the Govt. of India, Ministry of Culture, (Dealing with affairs of the Institute)	Member (Ex-Officio)
7.	Chief Education Officer, Leh (Representative of Education Deptt., Govt. of J&K)	Member (Ex-Officio)
8.	Geshe Konchok Namgail, President All Ladakh Gonpa Association, Leh (Representative of All Ladakh Gonpa Association, Leh)	Member
9.	Dr. Tsewang Thinley, President Ladakh Buddhist Association, Leh (Representative of Ladakh Buddhist Association, Leh)	Member
10-12	Three Buddhist Scholars nominated by Govt. of India	
	(i) Prof. Nawang Samten Former Vice-Chancellor Central University of Tibetan Studies (CUTS) Sarnath, (U.P.)	Member
	(ii) Dr. Ravindra Panth Director, Nav Nalanda Mahavihara Nalanda	Member
	(iii) Rev. Vimalatisa Bhikhu Village Chongkham, P.O. Chongkham Distt. Lohit, Arunachal Pradesh	Member
13.	Staff Representative nominated by Govt. of India	
14.	Prof. Konchok Wangdu, I/c Director, CIBS, Leh	Member-Secy



Annexure

COMPOSITION OF ACADEMIC COMMITTEE

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1	Prof. Yeshe Thapkas Central University of Tibetan Studies Sarnath	Chairperson
2-5.	One Representative each from 4 major sects of Mahayana Buddhism in Ladakh	
	1) Prof. Jamyang Gyaltzan	Members
	2) Dr. Urgyan Dadul	
	3) Khanpo Tsewang Rigzin	
	4) Prof. Konchok Angdu	
6.	Prof. Satya Pal Head Department of Buddhist Studies University of Delhi, Delhi.	Member
7.	Prof. R.K. Dwivedi Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy S.S. University, Varanasi.	Member
8.	Prof. B.N. Labh Head Department of Buddhist Studies Jammu University, Jammu	Member
9.	Prof. Sonam Gyatso Central University of Tibetan Studies Sarnath	Member
10.	Dr. Tashi Paljor Ex-Principal CIBS, Maitri Niwas, Bhajogi P.O. Manali, Distt. Kullu (H.P)	Member
11.	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Member-Secretary



Annexure

COMPOSITION OF FINANCE COMMITTEE, CIBS, LEH

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1.	Mrs. Mahalakshmi Ramakrishanan Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India New Delhi	Chairperson
2.	Shri S.K. Arya Deputy Secretary (Dealing with affairs of the Institute) Ministry of Culture, Govt. of India New Delhi	Member
3.	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Member
4.	Shri. Tsering Mutup Administrative Officer CIBS, Leh	Member-Secretary



Annexure

COMPOSITION OF PUBLICATION COMMITTEE, CIBS, LEH

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1.	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Chairperson
2.	Dr. Padmakar Mishra Publication In-charge S.S. University, Varanasi.	Member
3.	Chief Editor Translation Unit Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi (U.P.)	Member
4.	Khanpo Konchok Phandey Leh, Ladakh	Member
5.	Dr. Lobzang Tsewang Professor, Comparative Philosophy CIBS, Leh.	Member
6.	Shri Tsering Mutup Administrative Officer CIBS, Leh	Member-Secretary



Annexure

COMPOSITION OF LIBRARY COMMITTEE, CIBS, LEH

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Chairperson
2.	Librarian District Library, Leh	Member
3.	Dr. Tashi Samphel Director Srongtsan Library, Dehradun	Member
4.	Rev. Lagdor Director Tibetan Library and Archives Dharamsala (H.P.)	Member
5.	Smt. Tsewang Dolma Library & Information Officer CIBS, Leh	Member-Secretary



Annexure

COMPOSITION OF RESEARCH COMMITTEE, CIBS, LEH

<i>S.No.</i>	<i>Name and Address</i>	<i>Position</i>
1.	Prof. R.K. Dwevidi Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy S.S. University, Varanasi	Chairperson
2.	Prof. Pradyumna Dubey Professor of Pali & Buddhist Studies B.H.U., Varanasi	Member
3.	Dr. Hira Pal Gang Negi Associate Professor University of Delhi, Delhi	Member
4.	Prof. Jamyang Gyaltsan Professor of Bhot Literature CIBS, Leh	Member
5.	Dr. L.N. Shastri Chief Editor Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi (U.P.)	Member
6.	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Member-Secretary

**Annexure****STAFF STRENGTH CATEGORY-WISE OF CIBS, LEH****A. ACADEMIC POSTS**

S. No.	Name of Post	Pay Band & Grade (in ₹)	Sanct. Post	Filled up	Vacant
1.	Director	37400-67000+10000	01	01	—
2.	Professor	37400-67000+8900	04	03	01
3.	Reader	15600-39100+7600	10	07	03
4.	Lecturers	15600-39100+5400	23	23	—
5.	Master Craftsman	15600-39100+5400	01	01	—
6.	T.G.T.	9300-34800+4600	12	09	03
7.	Instructor (WC)	5200-20200+2800	01	01	—
8.	Gonpa Teacher	5200-20200+2800	100	90	10

B. NON TEACHING STAFF

1.	Adm. Officer	15600-39100+6600	1	1	—
2.	Addl. Adm. Officer	15600-39100+6600	1	—	1
3.	Office Superintendent	9300-34800+4200	1	—	1
4.	Accountant	9300-34800+4200	1	1	—
5.	Staff Nurse	9300-34800+4200	1	1	—
6.	P.A.	9300-34800+4200	1	1	—
7.	Head Assistant	9300-34800+4200	1	1	—
8.	Stenographer	5200 20200+2800	1	1	—
9.	Office Assistant	5200-20200+2400	4	4	—
10.	Cashier	5200-20200+2400	1	1	—
11.	Store Keeper	5200-20200+2400	1	1	—
12.	LDC	5200-20200+1900	1	1	—
13.	Pump-Operator	5200-20200+2400	1	1	—
14.	Driver	5200-20200+2400	2	2	—
15.	Guards Commander	5200-20200+2400	1	1	—
16.	Sr. Guardsman	5200-20200+1900	1	1	—
17.	Guardsman	4440-7440+1300	4	4	—



S. No.	Name of Post	Pay Band & Grade (in ₹)	Sanct. Post	Filled up	Vacant
18.	Jamadar	4440-7440+1400	1	1	—
19.	Peon	4440-7440+1300	6	5	1
20.	Hostel Cook	4440-7440+1300	4	3	1
21.	Hostel Bearer	4440-7440+1300	1	1	—
22.	Canteen bearer	4440-7440+1300	1	1	—
23.	Mali	4440-7440+1300	1	1	—
24.	Safiawala	4440-7440+1300	3	3	—

C. LIBRARY STAFF

25.	Library and Information Officer	15600-39100+5400	1	1	—
26.	Asstt. Editor Cum Cataloguer	9300-34800+4200	1	—	1
27.	Lib. Information Assitt.	9300-34800+4200	1	1	—
28.	Library Attendent	4440-7440+1300	1	1	—

D. RESEARCH WING

29.	Research Officer	15600-39100+5400	1	1	—
30.	Translator	9300-34800+4600	1	1	—

**Annexure****RESULT OF THE STUDENTS OF THE CIBS, LEH FOR THE YEAR 2013-2014**

S.No.	Class	No. of Students enrolled	Appeared	Passed	Pass %
A University Classes					
1.	P.M.Ist	84	82	47	57.31
2.	P.M.II	71	64	39	60.93
3.	U.M.Ist	81	80	74	92.50
4.	U.M.II	59	56	47	83.92
5.	Shastri Ist	63	58	47	81.03
6.	Shastri II	12	12	07	58.33
7.	Shastri III	31	29	27	93.10
8.	Acharya I	21	20	20	100.00
9.	Acharya II	06	06	06	100.00
Total		428	407	314	77.14
B Traditional Himalayan Arts					
1.	Wood carving	11	9	4	44.44
2.	Sculpture Course	17	17	16	94.11
3.	Amchi Course	34	31	29	93.54
4.	Painting Course	31	22	15	68.18
5.	Astrology Course	2	2	01	50.00
Total		95	81	65	80.24
C. Junior Wing					
1.	VI	59	54	50	92.59
2.	VII	93	82	78	95.12
3.	VIII	84	78	78	100.00
Total		236	214	206	96.26
Grant Total (A+B+C)		759	702	585	83.33

**Annexure****SCHOOL-WISE AND CLASS-WISE ENROLMENT OF STUDENTS OF THE
GONPA/NUNNERY SCHOOLS OF CIBS, LEH FOR THE YEAR 2014**

S.No.	Name of Gonpa/ Nunnery School	Class-wise total enrollment					No. of Teachers Posted	
		1st	2nd	3rd	4th	5th		Total
1.	Hemis Gonpa School	04	06	17	14	17	58	4
2.	Schachukul Gonpa School, Changthang	09	04	05	10	05	33	3
3.	Chemdday Gonpa School	01	05	10	04	—	20	2
4.	Anlay Gonpa School	02	—	06	05	06	19	2
5.	Karma Dupgyud Chosling Gonpa School	05	01	03	06	04	19	2
6.	Likir Gonpa School	01	02	06	07	03	19	2
7.	Thiksay Gonpa School	02	03	05	03	—	13	2
8.	Samstanling Gonpa School	03	02	02	04	06	17	2
9.	Spituk Gonpa School	07	03	09	01	03	23	3
10.	Phyang Gonpa School	—	—	02	07	07	16	1
11.	Gyudzin Tantric Gonpa School	07	08	—	—	—	15	1
12.	Matho Gonpa School	01	03	02	01	02	09	1
13.	Hanuthang Gonpa School	02	02	01	—	—	05	2
14.	Stakna Gonpa School	01	—	02	03	01	07	1
15.	Skurbuchan Gonpa School	—	03	03	—	—	06	1
16.	Muth Gonpa School	—	03	—	01	01	05	1
17.	Nyoma Gonpa School	04	—	02	04	04	14	2
18.	Chushul Gonpa School	03	03	—	03	05	14	2
19.	Rezong Gonpa School	08	04	06	04	01	23	2
20.	Disket Gonpa School	01	—	07	03	03	14	1
21.	Yarma Gonbo Gonpa School	02	03	03	—	—	08	1
22.	Bardan Gonpa School	02	06	—	01	01	10	1
23.	Korzok Gonpa School	04	03	04	04	—	15	2
24.	Karsha Gonpa School	04	11	02	02	—	19	2
25.	Lamayuru Gonpa School	—	03	06	04	05	18	2



S.No.	Name of Gonpa/ Nunnery School	Class-wise total enrollment					Total	No. of Teachers Posted
		1st	2nd	3rd	4th	5th		
26.	Phukthar Gonpa School	05	16	14	—	07	42	3
27.	Rangdum Gonpa School	08	07	05	01	03	24	2
28.	Muni Gonpa School	01	03	03	01	03	11	1
29.	Zongkhul Gonpa School	04	—	01	05	03	13	1
30.	Stongday Gonpa School	—	03	—	01	01	05	1
31.	Stagrimo Gonpa School	07	05	—	—	—	12	1
32.	Paldar Gonpa School	05	06	06	17	17	51	4
33.	Key Gonpa School	—	—	08	05	06	19	2
34.	Tangyud Gonpa School	—	12	12	12	—	36	3
35.	Urgyan Dorje Chosong, Saboo	18	05	—	—	—	23	1

NUNNERY SCHOOL

36.	Tingmosgang Nunnery School	—	—	—	03	08	11	1
37.	Skitmang Nunnery School	01	02	05	03	03	14	2
38.	Chulechan Nunnery School	11	02	02	05	01	21	2
39.	Bodh Kharbu Nunnery School	01	01	03	01	—	06	1
40.	Wakha Nunnery School	—	01	02	03	02	08	1
41.	Shargol Nunnery School	07	01	02	03	—	13	2
42.	Zangla Nunnery School	01	01	02	02	03	09	1
43.	Karsha Nunnery School	08	04	01	—	03	16	1
44.	Tashi Chosling Nunnery School	08	06	06	04	2	26	2
45.	Sakya Nunnery School	04	—	06	08	16	34	3
46.	Yangchen Chosling Nunnery School	10	—	15	13	—	38	3
47.	Tongri Nunnery School	02	06	06	01	08	23	2
48.	Dorge Zong Nunnery School	19	—	—	—	—	19	1
49.	Fokmoling Nunnery School	28	—	—	—	—	28	2
50.	Deachen Cholling Nunnery	25	—	—	—	—	25	2
Grand Total		246	159	202	179	160	946	90



Annexure

**RESULT OF THE STUDENTS OF DUZIN PHOTANG SCHOOL,
ZANSKAR, LEH-LADAKH FOR THE YEAR 2013-2014**

<i>S.No.</i>	<i>Class</i>	<i>No. of students enrolled</i>	<i>Appeared</i>	<i>Passed</i>	<i>Pass %</i>
1.	1st	74	67	57	85.00
2.	2nd	28	27	20	74.00
3.	3rd	24	23	19	83.00
4.	4th	28	27	24	89.00
5.	5th	31	31	28	90.00
6.	6th	25	25	22	88.00
7.	7th	28	28	22	79.00
8.	8th	25	25	25	100.00
9.	9th	28	28	17	60.71
10.	10th	13	13	08	61.53
Total		304	294	242	82.31



Annexure

THE STAFF STRENGTH OF THE DUZIN PHOTANG SCHOOL, ZANSKAR

	<i>Grade (in ₹)</i>	<i>Sanct. Post</i>	<i>Position</i>	<i>Vacant</i>
A. TEACHANG STAFF				
1. Headmaster	9300-34800+4600	1	1	—
2. T.G.T.	9300-34800+4200	7	7	—
3. Primary Teacher	5200-20200+2800	5	5	—
4. PET (Contractual)	17140 (fixed)	—	1	—
B. NON-TEACHANG STAFF				
1. UDC (contractual)	9910 (Fixed)	—	1	—
2. Cook	4440-7440+1300	1	1	—
3. Peon	4440-7440+1300	1	1	—
4. Driver (Contractual)	8510 (Fixed)	—	1	—
5. Mali	4440-7440+1300	1	1	—
5. Chowkidar	4440-7440+1300	1	1	—



Annexure

**RESULT OF THE BAUDH DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA,
KEYLONG, LAHAUL & SPITI, H.P. FOR THE YEAR 2013-2014**

S.No.	Class	No. of Students	Appeared	Passed	Pass %
1.	VI	6	6	6	100
2.	VII	6	6	6	100
3.	VIII	12	12	12	100
4.	P.M. I	06	06	06	100
5.	P.M. II	07	07	06	85.71
Total		37	37	36	97

Annexure

**THE STAFF STRENGTH OF THE
BAUDH DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA, KEYLONG, H.P.**

S.No.	Teaching Staff	Pay Band + Grade pay (in ₹)	Sanct. Post	position	Vacant
A. Teaching Staff					
1.	Headmaster	9300-34800+4800	1	—	1
2.	T.G.T.	9300-34800+4600	8	7	1
3.	Phy. Ed. Teacher	9300-34800+4600	1	1	—
B. Non-Teaching Staff					
4.	U.D.C.	5200-20200+2400	1	1	—
5.	Class-IV	4440-7440+1300	3	3	—

